21 ॐ

सोलह कारण विधान

(कविवर श्री टेकचन्द कृत)

व्रत माहात्म्य

दोहा

मानो आनो मन गहो, सोलहकारण भाव। नमों जजों जिनपद मिले, भलोमिलो शुभदाव।।1।।

सोरठा

ये धर्म कारण जान, स्वर्ग मुक्ति इनसों मिले। होय पाप की हान, नितप्रति मंगल सम्पजे।।2।।

चौपाई

यह व्रत मानव ही तें होई, देवों का अवसर नहिं कोई।
व्रतधारी कों देवा पूजें, व्रतधारी के सब अघ धूजें।।3।।

पद्धरि छन्द

यह वरत सर्वव्रत ऊंचे जान, ऊंच पद को दायक महान।
ऊंचे ही नर पै होय सोय, पूजे जो सो भी ऊँच होय।।4।।

अडिल्ल

कर्मशैल को बरत वज्र सम जानिये, जहाँ वरत तँह अशुभतनी हो हानिये।
वरत बड़ी सुरवृक्ष देय वांछित फला, बिन बाँछे जी करे धरे सिध की शिला।।

गीता

यह वरत वन्हीं कर्मवन को, पापबेल कुठार जी।
अशुभ घनका पवन दीरघ, मिथ्यात्वतम रविसार जी।
करणकरि का हरि समाना, मन कपी को श्रृंखला।।
शुभध्यान मन्दिर, नाव भवदधि, व्यसनमल जेता भला।।6।।

चौपाई छन्द

यह व्रत करे विनयजुत कोय, तो चउगति भरमन नहिं होय।
पूजे यह व्रत मन वच काय, जगत पूज्य पद सा जिय पाय।।7।।

भुजंगप्रयात छन्द

यह बरत सारं, हरे पापभामं, यह वरतनीका, हरे शोक जीका।
यह वरत जूना, करे दूर खूना, यह वरत प्यारा, करे पाप न्यारा।।8।।

छन्द त्रिभंगी

जो यह व्रत ध्यावे, नव निधि पावे, पुण्य बढ़ावे, अघ भानी।
यह व्रत सुखदाई, देत बड़ाई, सब जिय भाई, हितदानी।।
यह वरत प्रभावैं, पूज्य कहावै ज्ञान बधावै, शिवकारी।
यह वरत सुमित्ता, कर दे चित्ता, महा पवित्ता, भवतारी।।9।।

मुनियानंद की चाल

लखो इस वरत की उपमा है घनी, कही जिनदेव निजवाणि सब भनी।
तनिक सी यहाँ कही राग व्रत-कारने, सुनो भव्य करो यह वरत दुःख टारने।।10।।
।।पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

समुच्चय पूजा

(त्रिभंगी छन्द)

यह सोलहकारण भवदधितारण, काज सुधारण गुणधारी।
यह पाप नशावे, शुभ फल लावे, ध्यान बढ़ावे शिवकारी।।
तीर्थंकर पद दे जगथुति फलजे, पूजो भवि ते, हित भारी।
मैं मनवचकाई, यह गुन भाई, थापन लाई मदटारी।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र अवतरत अवतरत सम्वौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणानि अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

गीता छन्द

तन कर पवित्र सुधार वसु तर, भक्ति मनवच लायजी।
ले कनक झारी रतन ज़डित सु, चित्त में हरषाय जी।।
भर नीर गंगा तनों निरमल, गन्ध तँह अधिकाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ले बावनों चन्दन सु निरमल, नीरते घसि सारजी।
धर कनकपातर भाव शुभ करि, सकल मद को मारजी।।
कर काय मनवच शुद्ध परिणति, भक्ति उर बहु लाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

उज्ज्वल अखंडित बीन नखशिख, लाइये हितकारने।
बहु गन्धजुत शुभ धोय अक्षत् महा पुनिफल धारने।।
करि भावना अतिशुद्ध मनवच, काय जोग लगाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ले फूल सुरतरु कनक चाँदी, और कृत्रिम जानिये।
शुभ गन्ध गुजंत भ्रमर तिनपै, भले पुनि अनुमानिये।।

धरि भक्ति हिरदें कायमनवच, हर्ष बहु उपजाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
कर तुरत नेवज आदि मोदक, भले रस मिलवाय जी।
तिस देखतें नैवेद्य को दुख, रोग भूख नशाय जी।।
सो लेय निजकर धार हिरदै, भक्ति भाव लगाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
धर रतनदीपक कनकपातर, आरती शुभचित करो।
बहु हर्ष मनवचकाय धरि के, मोहतम-नाशन करो।।
हो ज्ञान ता फल भलो केवल, सकल संशय जाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
धूप दशधा अगर चन्दन, अरु सुगन्ध मिलाय जी।
सो खेयकरि फल कर्मक्षय हो, घनी कहा वरनाय जी।।
तिस धूप की ले गन्ध लोलुप, भ्रमर शब्द कराय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
फल लेय श्रीफल लोंग खारक, भले और बदामजी।
इन आदि और अनेक शुभफल, लेय सुखके कामजी।।
कर कायमनवच भक्ति नीकी, राग उर बहुलाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।
जल सद्य चन्दन सुभग अक्षत, पुष्प चरु दीपक सही।
फिर धूप फल इमिह आठ द्रव्य, भले भावन अघ दही।।
धर भक्ति मनवचकाय हिरदें, आरती शुभदाय है।
मैं जजों षोड़शभावना शुभ, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

जयमाला - चौपाई छन्द

षोडशभावन पावन जान, यह तीर्थंकरपद फलदान।
याको ध्याय भये जिन घने, चार घातिया कर्म जु हने।।1।।
भी भवि षोढशकारण करो, ताकी विधी हिये में धरो।
तीन प्रकार वरत को करो, जघन मध्य उत्कृष्टै धरो।।2।।

मास एक उपवास कराय, सो उत्कृष्ट जु विधि मन लाय।
बेले बेले पारण करे, तथा एकान्तर अनशन धरे।।3।।
जो लघुशक्ति धार जिय होय, पाँचों परवी अनशन जोय।
यातें भी लघुशक्ति धरे, तो षट्वास नांहि परिहरे।।4।।
ताकी विधि ऐसी ही जान, आदि अन्त दो पड़वा आन।
दो आठें दो चौदश वास, ये षट्वासजघन्य विधिभास।।5।।
बाकी दिन एकासन करे, एक बार सो भोजन धरे।
फेर न लहे नीर का सोय, ऐसे वरत करत शुधहोय।।6।।
षोडशवर्ष करे जिय सोय, फिर उद्यापन की विधि होय।
नाँहीं व्रत को दुगना करे, पीछे शक्तिसदृश व्रत धरे।।7।।
जो फिर शक्ति होय तो धीर, आयु लगें करनों वरवीर।
यह सामान्य वरत विधिजान, और विशेष ग्रन्थतें मान।।8।।

सोरठा

या विधि षोडशभाव, जो भवि पूजे भावसों।
सो जन जिनपद पाय, और कहा फल गाइये।9।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादिषोड़शकारणेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

1. दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

(मुनयानन्द की चाल)

भावना दर्शनशुद्धि सो जानिये, तास मधि दोष पच्चीस नहिं मानिये।
या विना मोक्ष को और अंग ना करे, जजों इमिजान इहाँ थापि सो अघहरे।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र अवतर अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

गंगा नीर अति निर्मलो जानिये, रतनतें ज़डित शुभपात्र में आनिये।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सुभगचन्दन घस्यो नीरगंगा थकी, कनकझारिधरों भक्ति मुखतें छकी।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सुभग अक्षत महा ऊजरे गंधमई, भक्तिभावन थकी अखत कर में लई।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

फूल सुरवृक्ष के गन्धजुत लाइये, होय परफुल्ल उर फूल चढ़वाइये।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
सुभग चरु लेय षट् रस तनै सारजी, कनकपातर विषै भक्तितैं धारजी।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
दीप मन के हरा रतनमय सारजी, कनककरि थाल भरि आरती धारजी।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
धूप दशधा महागन्ध जुत सब लई, खेय वन्हीं विषें भक्ति मुखतैं चई।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
सुभग श्रीफल भला आनिफल सारजी, भक्तकों देत हैं मुक्तिफल धारजी।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
नीर चंदनाक्षतं पुष्पचरु दीपजी, धूपफल लेयकारै अर्घ्य शुभटीपजी।
पूजिये भावना, दर्श शुद्धि आदिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
भावना भली यह दर्शसंशुद्धिया, सकल धर्म अंग के मुख्य यह जिन चया।
या भये मोक्षमग निकट भासे सही, जानि इमि भली हम अर्घ्य करते ठही।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

प्रत्येकार्घ्यं

(मुनियानंद की चाल)

धर्ममारग विषें, शंक ताके नहीं, होय निर्भय गुरू देव धर्म पद ठही।
भेदविज्ञान में, शंग नहिं आय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री निःशंकितगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म सेवे नहीं, चाह हिरदे करे, भोग चक्री सुरा इन्द्र के परिहरे।
एक शिवचाह अनि, भूल नहिं पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री निःकांक्षितगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देख परवस्तु चित, घिन नहीं आनि है, रूप शुभ अशुभ सब, पौद्गलिक मानिहै।
निर्विचिकित्सगुण यही, जीव हितदाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री निर्विचिकित्सागुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव गुरु धर्म को, परखसेवे सही, बिन परीक्षा गुरु देव सेवे नहीं।
दृष्टि सांची सरध, उर विषें पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।
ॐ ह्रीं श्री अमूढदृष्टिगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
स्वपर के दोष को, नाँहिं मुखतें कह, दोष परके सदा, ढाँकना उर चहै।
सदाचित्त शान्त, करुणामई पाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री उपगूहनगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म से डिगत को थिरी सो करत है, देत उपदेश मन-भरम को हरत है।
धर्मधर आप फिर और धर्मदाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री स्थितिकरणगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देश धर्मी भली, प्रीति तासों करे, गऊ लख पुत्र ज्यों, हर्ष मन में धरे।
धर्म अंग धार हित-कार गुण पाया है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री वात्सल्यगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मन वच काय धन, बुद्धि तपये सही, मति श्रुतज्ञान मन-पर्ज अवधी कही।
धर्म परभाव इनतें करे भाव है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री प्रभावनागुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
आठ गुण ये धरे, शुद्ध सरधा करे, तत्त्व सरधान में, भरम नाँही परे।
आप चिद्रूप, पर देख जड़ भाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टगुणसहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मातृपक्ष मदकरे, हर्ष मन में धरे, नाम मम मान बहु, धान धन अनुसरे।
जाति मद जान यह, नांहि उर लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री जातिमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पितामह पिता मम, बड़े पदधार हैं, द्रव्य बहु हुक्म को, सके नहिं टार हैं।
जान यह कुलमद, नांहि उर लाय हैं, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कुलमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य बहु लाय हूं बुद्धिबलतैं सही, दीप दधि मैं फिरयो माल पैदा करी।
लाभप्रद जान यह नाँहि उर लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री लाभमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
रूप हम तनु जिसो, काम तन है नहीं, नैन कर शीश मुख, महासुख की मही।
जान यह रूपमद, नाँहि उर लाय है। भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री रूपमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
करों तप मास, दो मास, षट् मास जी, और वह तप करों, धारि अति सांसजी।
जान तपमद यही नाहिं इमि भाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री तपोमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मो समान और में, नाहि बल जानिये, मैं बली महा परचण्ड अति मानिये।
जान बलमद यही, नाहिं उर लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री बलमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मैं पढ़्यो काव्य व्याकर्ण प्राकृत सही, निमित्त ज्योतिष घनैं, ग्रन्थ देखे सही।
जान यह ज्ञानमद, नांहि जो लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री विद्यामदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मो हुकम आज नृप, पंच सब मान है, लोक में हम बड़े और नहिं आन है।
जान अधिकार मद, उर नहीं लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अधिकारमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जाति अरु लाभ कुल, रूप तपबल सही, ज्ञान अधिकार मद, आठ ये दुख मही।
जान दुखदाय मद, अष्ट नहिं लाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अष्टमदरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म सेवन विषें शंक जो चित धरे, नांहि निर्भय थकी, धर्म बिच संचरे।
जान सम्यक्त्व को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री लंकादोषरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म को सेय सुख, चाहता लोक में, तासतें आपने, किये सब शुभ हने।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री कांक्षादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देख पर वस्तु को, घृणा आने सही, कर्म को ठाठ समझे, नहीं उर मही।
जान यह सम्यक् को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री विचिकित्सादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देव धर्म गुरु जे परख बिन सेय हैं, मूढबुद्धिधार ते, अशुभ फल लेय है।।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय हैं, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री मूढदृष्टिदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देख परदोष शठ, आप मुखतें कहे, दोषयुत चित्त उर, मांहि दुर्जन रहे।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री परदोषभाषणदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
धर्मसेवनविषें खेद जो जिय करे, अथिरता भाव उपजाय धर्म परिहरे।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अस्थितिकरणदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जीव धरमी थकी, दोष जो उर करे, भाव वात्सल्य का सकल वो परिहरे।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री अवात्सल्यदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म परभावना, ताहि नहिं उर चहे, देख परभावना, हर्ष नाहीं लहे।
जान यह सम्यक को, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रभावनादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोष शंकादि ये, आठ मन आनिये, इन भये नाश सम्यकतनों जानिये।
अशुभ यह जानकर, नांहि हरषाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शंकादिअष्टदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

योनिधर देव नहिं प्रभुपद तिनविषें, तन धरे फिर भरे, तिनहिं प्रभुपद अखे।
न यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेवप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बिन दिगम्बरत्व जग, देव जे हैं सही, भक्त इन देव लखि भला माने वही।
जानि यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुदेवभक्तप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीवघाती धरम, पापकी खानि है, जीव भोरे हने महाशुभ मानि है।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्मप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीवघाती धरम, सेवका खानि है, ताहि पर शंसते नायतन होय है।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुधर्मसेवकप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विषय उपदेश गुरु, क्रोध मानी सही, तिनहिं गुरु मान जे, चहें शुभ की मही।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरुप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कुगुरु के भक्त जो, सेव नीकी करे, देख ताको भलो, जान शोभा धरे।
जान यह नायतन, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री कुगुरुभक्तप्रशंसानायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव की परख बिन, प्रभूपद जो कहे, मूढता देव की, जीव सो शिर लहे।
जान यह मूढता, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री देवमूढतादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दयाशून्य धर्म की सेवमें जो परे, परख बिन धर्म की, सेव जो अनुसरे।
जान यह मूढता, दोष जो ढाय हैं, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री धर्ममूढतादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

परख विन सेव जो, गुरुतनी ठानिये, आप शिर भूलका अशुभ बन्ध आनिये।
जान यह मूढता, दोष जो ढाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री गुरुमूढतादोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आठमद आठ शंगादि मल जानिये, नायतन जान षट् मूढत्रय मानिये।
दोष पच्चीस इन, रहित सो भाय है, भाव सो दर्शसंशुद्धि सुखदाय हैं।।
ॐ ह्रीं श्री पंचविंशतिदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

द्यूत आमिष सुरा गणिका, खेट चोरी जानिये।
परनारिवांछा सात हैं, ये व्यसन अघफल मानिये।।
जो तजे सांची दृष्टि ताके, होय सब सुख आय जी।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री सप्तव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो द्यूतलेखन चित्त वांछे, पाय दुख अपखेत हैं।
श्रीमान को करके भिखारी लोकनिन्दा देत हैं।।
जो जान खोटा तजे याकों, भावसमतालाय जी।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री द्यूतव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सप्तधातुन माहिं निन्दित, महाघिनकारी सही।
या देखते ही अशन तजिये, खाय सोजिय अघमही।।
जियघात विननाहोय आमिष, त्यागनाबुधिलाय जी।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री मांसव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो पिये मदिरा, तजे शुधबुध, ज्ञान सकल गमाय है।
या अमल माहीं मात भगिनी, नार भेद न थाय है।।
यह व्यसनमदिरा हरे जुगभव, तजेपुण्यलसाय जी।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री मदिरापानव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
यह गिनी गणिका, जगत पातल, जूंठसम बुधजन कही।
जो रमें याते धर्म खोवे, महा अघ की सो मही।।
यह व्यसन दुखदा जान त्यागे, महाशुभ फल पाय जी।
जो धरे दर्शविशुद्धि भावन, भलो जिनपद पाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री वेश्यारमणव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(खडगा छन्द)

आपसम जीव को, घात कैसे करे, घाव किमु देय आयुध तनो जी।
कण्टतैं काय कम्पाय सब आपकी, दुख थकी रोय, कहे मति हनो जी।।

गोधिया जीव हन, भील या पारधी, ऊंचकुल जीव को ना सतावे।
त्याग खेटक व्यसन, दया उर में धरे, दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे।।
ॐ ह्रीं श्री आखेटव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दाम पर का हरे, हरष मन में भरे, पाप निजशिर, धरे मूढ प्रानी।
चोर के भाव, छलछिद्र अधिको धरे, काय तज दुःख लहे हीनज्ञानी।।
व्यसन यह चोर, नर्क देय घनघोर, दुःख लहे अधिकाय, नहीं पार पावे।
त्याग यह व्यसन, परिणति को शुद्ध करे, दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे।।
ॐ ह्रीं श्री चौर्यव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
नारि पर चहे सो, शीश अघ लहे जो, यह त्यागे सो धर्मराह जाने।
देख परतिया चित्त, मात सम किया, बहिन सम जान, उर ज्ञान आने।
व्यसन उरनांहि ते, शुद्ध चितमाँहि जिय, होय समभाव, शिवराह जावे।
त्याग परनारि का, व्यसन शुद्धमन करे, दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे।।
ॐ ह्रीं श्री परदार रमणव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
व्यसन ये सात नर्क, सात के प्रीतमा, धर्म को दोष, या जान त्यागे।
होय जिनदास उर-धार शिवआश भव्य, धर्म धार आप, चित मांहि जागे।।
ते जग जस लहे, सफल भवतें रहे, नाहिं जे व्यसन-वश आप आवे।
भेद विज्ञानतें, आप पर भिन्न लखे, दर्शसंशुद्धि भाव सो नाम पावे।।
ॐ ह्रीं श्री सर्वव्यसनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

नहिं संक्रान्ति दान सरधाना, जाने आतमरूप पिछाना।
नांहि अतत्त्व भाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री संक्रान्तिदिवसदानदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
अग्नि सेव नांहीं मन लावे, इसकी दया ठान शम थावे।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री अग्निसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ग्रह नक्षत्र पूज नहिं आने, त्रिभुवनपति पूजे सुख माने।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री ग्रहनक्षत्रसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गोयोनी वा पूंछ न पूजे, अघ कारजतें मन वच धूजे।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री गोयोनिपुच्छादिसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मणिपाषाण सेवता नांही, जाने पृथ्वीकाय सु ठांही।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री मणिरत्नपाषाणादिसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
भूमिदेव पूजा परिहारे, पूजे जिन समता उर धारें।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री भूमिसेवारहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पर्वत पतन थकी सुख होई, यह भ्रम उर में लहे न कोई।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री पर्वतपतनरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
नदी-स्नान शुद्धि नहिं माने, ज्ञान-स्नान शुद्ध सरधाने।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री नदीस्नानश्रद्धान-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
अग्निपाततें मुक्ति न माने, मुक्ति शुद्ध अनुभव तें जाने।
ज्ञान स्वभाव आप उर भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री अग्निपातरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
कुगुरु सेव श्रद्धा नहिं जाके, वीतराग गुरु गणना ताके।
ताको आतमज्ञान सु भावे तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री कुगुरुसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गज तुरंग वृष सेव न ठाने, जिनपद सेये भक्ति सु माने।
भेदविज्ञान राह समझावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री वाहनसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जीवघात आयुध तैं होई, सो आयुध पूजे नहिं कोई।
आतमसेवा जिनको भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री शस्त्रसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
हिंसकदेव न पूजे भाई, वीतराग कों जजे सु जाई।
जो सांची श्रद्धा उर भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री हिंसकदेवसेवारहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
निशि अहार त्याग करिसारा, आतम अनुभव भाव विचारा।
भेदज्ञानते निज पर भवे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री निशाऽऽहाररहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
बिन छाने जल को नहिं पीवे, करुणा कर समतातें जीवे।
चेतन आप अन्य जड़ भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।
ॐ ह्रीं श्री जलगालनविधिसहित-रहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
वटफल जीवराशि नहिं खइये, दयाधार उर समता लहिये।
तन विरक्त शुद्धातम भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री वटफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पीपलफल जगम जियरासी, खाय नहीं तिन करुणा भासी।
ममत छाँडि निजआतम ध्यावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री पिप्पलफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ऊमरफल अभक्ष्य तजखाना, शुभ आचारी दया निधाना।
चेतनदेव आपसम भवे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री उदुम्बरफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

फल कठूंबरा खाय न सोई, शुभ अचार करुणाधर होई।
निराकार फलको जो भावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री कठुम्बरभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मक्खीवमन निंद्य मधु जानो, शुभ आचारी होय न खानो।
रसन लोभ त्याग हरषावे, तो सम्यक्त्व पूज्य कहलावे।।

ॐ ह्रीं श्री मधुभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

दर्शनविशुद्धि भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही।
यह मोक्ष वट का बीज नीका, या बिना नहिं शिवमही।।
या देय तीरथनाथ पदवी, महा मंगलदाय है।
सो जजों दर्शन भावना, शुभकाय मनवच लाय है।।

ॐ ह्रीं श्री सकलदोषरहित-दर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(पंचमंगल की चाल)

भो भवि दर्शविशुद्धि भावना जानिये, दोष पचीस आदि नहिं तामें मानिये।
सब गुनमें यह भावन पावन सार है, सकल गुणन की खान मान भवतार है।।

तारे जु भवदधि नाव जैसे, करम संकट टारनी।
दे मोक्षथानक पूज्य त्रिभुवन, काम वांछित सारनी।।
याकी जु महिमा कहे कवि किम, पार गुण ताके नहीं।
गम्य ज्ञानी सकल जाने, और की मुखतें कही।।

ये शुभभावन जिनपद-दायक जानिये, मोक्षवृक्ष को बीज मिथ्यातम हानिये।
याही के परभाव समवसृति थाय है, होत कल्याणक पाँच सांच शिव पाय है।।

पाय पंचकल्याण शिव ले, फेर जग नहिं आय है।
तन छांड जड़ चिद्रूप निवसै, ज्ञान केवल पाय है।।
यह सकल महिमा जान याकी, भले फलकी दाय है।
तातें जु सेय विशुद्ध दर्शन, भक्ति उर बहु लाय है।।

अब यह दर्शविशुद्धी निरमल भावना, भाये वांछित मन फल नीका पावना।
षोडशकारण मांही कारण सार है, याहीं ते सब धर्म महा फलकार है।।
फलकार या बिन धर्म नांहीं, करे विरथा जायजी।
बहुदान तप तन कष्ट संयम, नाँहि शिवफल दायजी।।
तातें जु शिवमग लोभिया जे, सुरति भाषित सो करो।
ये भावना शुभ काय मन बच, आपने हिरदें धरो।।
मैं भी सफल आप भव तबही मानिहों, दरशविशुद्धी भावन उर में आनिहों।
या भावन भाये बिन भववन में फिरयो, मानि मानि निज ठाँम शीशपै अघ धरयो।।
धारयो जु सिरपै पाप समझे, बिना दुख तातें लये।
अब काल तिनको निकट आयो, भव हम ऐसे भये।
भावै जु दर्शविशुद्धी मन वच, काय जोग लगाय जी।
ता कियो सबही धर्म नीको, होय इमि समझाय जी।।

दोहा

दश विशुद्धी भावना, भावो मन वच काय।
तो बांधो पद तीर्थ को, और अधिक कहा गाय।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

2. विनय सम्पन्नता भावना पूजा

(मुनयानन्द की चाल)

विनय सब धर्म को मूल जानो सही, विनय बिन धर्म विधि सकल निष्फल कही।
जान इमि थापना थाप यहाँ भायजी, विनय-सम्पन्नता जजों मन लाय जी।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

नीर गंगातनो, निर्मल लाइयो, कनकझारी विषैं, धार शुभ पाइये।
पूजिये विनयतैं विनयभावन सही, तासफल निर्मलो, होय उर जिन कही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

लाबनो चन्दना, नीर घसवाइये, रतन पातर विषें धार गुन गाइये।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, तासफल चार-गति-पाप विनसे सही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

खंडबिन ऊजरे, मुकतफल से कहे, तन्दुला थाल भर, आपने कर लहे।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, तासतें खय फाल, होय जिनधुनि कही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

देवतरुके भले, फूल शुभ आनिये, माल बहु गूँज उर, भक्ति मन ठानिये।
पूजिये विनयतें, विनयभावन सही, तासफल कामजुर, नाशहो इमि कही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

भेलि षट्-रसा, नैवेद्य करनो भलो, भक्तिभावन किये, थाल में धर चलो।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, भूख की वेदना नाश तासफल रही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपमणि रतन के, ज्योति तम नाशजी, कनक भरि थाल ले, आरती भासजी।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, नाश अज्ञान कर ज्ञान प्रगटे मही।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूपबन्ही विषें अगर को जारिये, गन्ध महा सुभग धर हाथ निज धारिये।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, आठ कर्मदहन होय वानि जिन इमिकही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुभग फल लाय नारेल बादाम जी, आदि खारक घने, महाशोभ ठामजी।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, मोक्षफल सो करे, पूजिफल धुनि कही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गन्ध अखत पुष्प, लेय चरु दीप जी, धूप फल अर्घ्य तें कर्म सब टीप जी।
पूजिये विनयतें विनयभावन सही, तासफल पूज्यपद, लहे निश्चय कही।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

(अडिल्ल छन्द)

पढ़ै विनयतें पाठ विनयतें जो सुने, धरे विनयतें पुस्तक पुट्ठा शुभ ठने।
अक्षर चांदी कनक लिखावे सारजी, विनयसार शुभज्ञान तनों अधिकारजी।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानविनय भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दरशन शुद्ध सरधान, देखनों जानिये, अवलोकन गुणसार, विनयते आनिये।
श्रद्धा दृढ़ उरमांहि, विनय सो सारजी, विनयसार शुभज्ञान तनों अधिकारजी।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विनय भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जतन समिति का करे, गुपति पाले भलो, महावरत शुध करे, विनययुत सब मिलो।
करे जतनतें सोय, विनय विधि है सही, चारित त्रयदश सार जजों विधितें मही।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्र विनय भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यथायोग्य सब ठाम, विनय सबको करे, देव धर्म गुरु सार, भली धुति उच्चरे।
पूजे चाव कराय, भाव शुभ लायजी, सो उपचार सु विनय, महा सुखदायजी।

ॐ ह्रीं श्री उपचारविनय भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विनय चार परकार, और बहुभेद है, पूजें जो मन लाय, भली तिस टेव है।
विनय भावना सार, जगत में जानिये, सो पूजे मनलाय, बड़ी गुनखानि ये।।

ॐ ह्रीं श्री विनयसम्पन्नता भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

विनयभावना बहु सुखदाई, विनयभाव विन भव भरमाई।
धर्ममूल सब विनय है भैया, इमि लखि विनय पूजसिरनैया।।
सोलहकारण में सरदारा, विनयभावना है अघजारा।
विनय सकलको है सुख दैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
विनयभाव गुरु का जो कीजे, तो शुभ होय पाप सब छीजे।
विनय थकी सबने सुख पैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
विनय मानगिरिहरण प्रचण्डा, वज्रदण्ड सम है बलचण्डा।
अविनय वन को बन्ही भैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
जगमें विनयधर्म परधाना, विनय सर्व का राखे माना।
विनय जिसाबल्लभनहिं भैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
तातें विनयभाव उर लावो, तो सब जग में महिमा पावो।
सबमें विनय मुकतिगुन दैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
विनय सकल दोषन को खोवे, विनय मानमल को धो देवे।
विनय ज्ञानतरु को पय पैया, इति लखि विनय पूज सिरनैया।
कीजे विनय देव गुरु केरा, वृष की विनय हरे भवफेरा।
विनय थकी जग विनय करैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।।
विनयभाव ताके उर जागे, जा उर कुटिलभाव नहिं लागे।
विनयभाव सब दोष हरैया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।
विनय आदि बहुतक गुणकारी, सबविध मंगल विनयउचारी।
तातें और धनी क्या कहिया, इमि लखि विनय पूज सिरनैया।
तीर्थंकर पद करन को, समरथ बहु सुखदाय।
भवदधि तारण नावसी, विनयभावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री विनय भावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

3. शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पचवाणतें रहित, बाड़ नवजुत सही, सहस अठारह, अतीचार जामें नहीं।
सर्व दोषतें रहित, शील सो भावना, ताके इह शुभ भाय, थापि सिर नावना।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सर्वदोषरहित शीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अडिल्ल

पदम कुण्डको नीर सुनिर्मल लायके, झारी रतन भराय भक्ति मन भायके।
शीलव्रतेषु भाव पूज हो सारजी, जनम जरामल जाय होय भव पारजी।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन बावन पावनकारी सोहनो, निर्मल जल घसिलाय गन्ध मन मोहनो।
शीलव्रतेषु भाव पूज भवि भाय जी, ता पूजाफल ताप जगतदुख जायजी।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल, नखशिख शुद्ध बखानिये, सो ले उज्ज्वल, भाव भक्ति मन आनिये।
शीलव्रतों मे, अनतिचार सुखदाय है, ताके पूजे दोषरहित पद पाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

देवद्रुम के फूल, गन्ध रंग जुत सही, कर तिनकी शुभमाल आपने कर लही।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, ताके पूजे दाह, कामज्वर जाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस नैवेद्य भेद बहु लाइये, मोदक फेनी आदिक थाल भराइये।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, भूखराग क्षय होय निराकुल थाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप भरि थाल, जोति परकासिका, धारि आरती हाथ, करम-तम नासिका।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, मोहतिमिर हो नाश इसी फल पाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांग बनाय, भक्ति उर लाय है, अग्नि मांहि ता, जारि महासुखपाय है।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, अष्टकर्म क्षय होय, निरंजन थाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सार बदाम, दाख पिस्ता सही, खारक आदि अनेक, और फल सुखमही।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, ताके पूजे मोक्ष, महाफल पाय है।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सुम, चरु दीपक सही, धूप फला द्रव्य आठ, जोरि अरघै ठही।
शीलव्रतों में, अनतिचार सुखदाय हैं, सिद्धलोक शुध थान, तासफल पाय है।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

(चौपाई छन्द)

शीलभाव नवबाड़ समेत, सो शिवनारी दे उर हेत।
आठ द्रव्य कर अर्घ्य बनाये, पूजों शीलवर शुभ भाय।।

ॐ ह्रीं श्री नवबाड़सहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रागसहित तियतन नहिं जोय, ताके शील भावना होय।
सो ही आठों द्रव्य मिलाय, पूजों शीलवर शुभ भाय।।

ॐ ह्रीं श्री रागसहितस्त्रीतनावलोकनत्याग शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रागवचन मुखतें नहिं कहे, सुनिके ताहि राग नहिं लहे।
ये लख शीलदोष नहिं लाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री रागवचनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूरब भोग न चिन्ते सोय, ताके शील बरत दृढ़ होय।
शील भावना सब सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्वभोगचिन्तारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन वृष्य गरिष्ट न लेय, दूध धीव मावा ना देय।
शीलभावना सो दृढ़ लाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री गरिष्टभोजनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पट भूषणतें तन श्रृंगार, करे न शीलव्रतों को धार।
तातें यह व्रत सुरपद दाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री तनृश्रृंगाररहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नारी जिस शय्या पर सोय, तँह नहिं सोवे व्रतधर कोय।
या फलजीव शिवपाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री स्त्रीशय्याशनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कामकथा न करें मुख सोय, दे चित कामकथा नहिं जोय।
ऐसी वरत शील सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।

ॐ ह्रीं श्री कामकथारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पेट धाप भोजन नहिं खाय, ताके शीतवरत मन आय।
शीलदोष बिन सो शिवदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री पूर्णोदर भोजनरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काम चाहतै सोच बढ़ाय, उपजे चित दुख धीर न पाय।
यो तजशीलभाव शुध भय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री कामेच्छारहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हो सन्ताप कामवश सोय, ता वेदनतें अति दुख होय।
यो तजि शुद्धशील मन भाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री सन्तापकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कामवाण जाके मन सोय, मन उदास उच्चाटन होय।
यो तजि शुद्धशील मनभाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री उच्चाटनकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वशीकरण विधि शुध विसराय, तावश और न काज सुहाय।
या बिन शील भाव सुखदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री वशीकरणकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनविधिमोहित चित सोय, ताको हौल दिला चित होय।
या बिन शील शुद्धता थाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री मोहनकामवाणरहित शीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये ही पाँच काम के वाण, हैं लौकिक शील ही हान।
इन बिन भाव शील हितदाय, सो मैं शील जजों शिरनाय।।
ऊँ ह्रीं श्री पंचकामवाणरहित लौकिकशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अब सुन पंच कहे श्रुति वाण सु काम के, शीलहरण को सूर नाहिं किस आनि के।
यातें रहित सुशील शुद्ध मनभाय है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ऊँ ह्रीं श्री पंचवाणकामरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कामवाण करि पीडित चित जिस होय है, देख तिया मन मुलकन हास्य बहोत है।
या दूषण ते रहित शील शुध भाय है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री कामौत्सुक्यहास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बार बार तिय देखन की बांछा रहे, और न कछु सुहावे अवलोकन चहे।
ऐसे मलतें रहित शील शुध भाव है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री अवलोकनकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देख नारि की ओर हास्य चितको करे, कामवचन तन ठान घनो कौतुक धरे।
ऐसे अरितें रहित शील शुध भाव है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री हास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सैन सैना बतावन कामी चित रहे, नैन बाणतें हाथ करन किरिया लहे।
ऐसे औगुण रहित शील जो भाय है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री नेत्रसंचालनकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काम सतावे जाहि जीव उर इमि रहे, मन्द हास्य उर लहे देख तिय सुख चहे।
ऐसे पातकरहित शील जो भाव है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री मन्दहास्यकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नारितनों सत्कार घनों कर आदरे, नाना पट भूषण भोजन देय खुशी करे।
ऐसे दूषण रहित शील शुभभाव हैं, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री स्त्रीसत्कारदोषरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नारि मिलन की चाह सदा उर मांहि जी, कामबाण यह आन महा दुखखान जी।
ऐसे अशुभ निवार शील गुणदाय है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री स्त्रीमेलकामवाणरहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच काय लगाय काम ऐसो करे, तातें वीरज क्षरे हरष मनमें धरे।
या दूषणतें रहित शील शुभ भाव है, सो मैं पूजों मनवचकाय लगाय है।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्यपातातिचाररहितशीलवाड़सहित-शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

इत्यादिक-दूषण-रहित, शीलवर जो भाव। तीरथपद यातें मिलें, मैं पूजों करि चाव।।

ॐ ह्रीं श्री दोषरहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सकल धर्म यातें रहें, या बिन धर्म अधर्म। लातें सबमें शील शुभ, काटत खोटे कम।।

(मुनयानन्द की चाल)

शील सब धर्म को मूल मन आनिये, शीलगुण पूज्य सुरलोकतें जानिये।
शीलसो सार गुण और नहि पाय, मैं नमों शीलगुण शीशकर लाय है।।
शील ही सर्वदा सांच शिवराह है, शीलगुण कामकी हरत सब दाह है।
शील जगपूज्य मुनिराज इमि ध्याय है, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील शिव-राह को वाहना सार जी, शील ही मोक्ष दे करे भवपार जी।
शील भवसागरा तार नौकाय है, मैं नमो शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील सरदार सब धर्म अंग में सही, शील रवि कामतमनाशि जिनधुनि कही।
शील ही पापतरु-हरण असि पाय है, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील कपि काम-बन्धन भली सांकरी, शील मदमदनगजहरन हरि बांकरी।
शीलधर्मकेतु का दण्ड शुभ भाय है, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील समभाव का दाव कर चाव है, शील सरिता हरे काममलभाव है।
शील धर्मचक्र की किरण सुखदाय हैं, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील शुम शरण अरु करण मंगल सही, शील जिनदेव-पदवी भली दे कही।
शील शाश्वत भला सर्वदा दाय है, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।
शील सो सार उत्तम नहीं कोयजी, ताफलै सकलसुख सहज ही होयजी।
शीलगुण सेवना शर्मदा भय है, मैं नमों शीलगुण शीश पर लाय है।।

सोरठा

शील शिरोमणि धर्म, शील शाश्वती पद करे।
शील हरे सब कर्म, शील जजों यातें सही।।

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रतेष्वनतिचार भावायै पूर्णार्घ्यम्।

4. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना पूजा

(चौपाई)

करे निरन्तर ज्ञान अभ्यास, ज्ञान थकी शिवमारग भास।
ज्ञानभावना मंगलदाय, सो मैं थाप जजों श्रुति लाय।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(चौपाई)

क्षीरोदधिको निरमल नीर, कनकझारि को भर हर-पीर।
पूजों ज्ञानभावना सार, ताफल होय जनममृतिछार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन पावन पावन लाय, धार करों उर भक्ति बढाय।
पूजों ज्ञानभावना सार, तातें भव आताप निवार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल मोति समान, खंड बिना शोभे सुमहान।
पूजों ज्ञानभावना सार, अक्षयफल की जो दातार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु फूल गन्ध रंग वान, तिनकी माला ले अमलान।
पूजों ज्ञानभावना सार, मेटन मनमथ काम विकार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस नैवेद्य बनाय, कंचनथाल भरे शुभ लाय।
पूजों ज्ञानभावना सार, क्षुधारोग करने को छार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिका विपुल प्रकाश, कंचनथाल भरे थुति भास।
पूजों ज्ञानभावना सार, मोह तिमिर ताफल परिहार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अगर चन्दन की लाय, अग्नि खेवने को उमगाय।
पूजों ज्ञानभावना सार, कर्म अष्ट जालन दुखटार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सार बदाममहान, खारक आदिभले फल आन।
पूजों ज्ञानभावना सार, वांछित मोक्षफले हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सुम जेय, चरू दीपक अरु धूप फलेय।
पूजों ज्ञानभावना सार, अद्भुत फलदायक निरधार।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य चौपाई

मतिज्ञान उपयोग सु जान, इन्द्रिय मन द्वार है ज्ञान।
अधिक छतीस तीन सै भेव, इनकी मनवच करिहों सेव।।

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान मय वरते सोय, जो उपयोग धनी विध होय।
द्वादशांग के जाने भेव, इनकी मनवच करिहों सेव।।
ऊँ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

ज्ञान निमित्त सु आठ मांही, मन वचन बरते सही।
निशदिन करे अभ्यास तिनको, मरमको लख सब कही।।
सो जान ज्ञानोपयोग नीको, भली जुत गिनों।
मैं जजों मनतन वैन शुधकर, अज्ञानतम ताफल हनो।।
ऊँ ह्रीं श्री अष्टनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
आकाश में रवि चन्द्रतारा, मेघ पटलादिक लखे।
सन्ध्या समय के चिन्ह और, अनेक बातन को अखे।।
सो होय इनके निमित्त सेती, शुभाशुभ सो जानिये।
अन्तरीक्ष निमित्त-पयोग ज्ञानसु, जजों बहुथुति आनिये।।
ऊँ ह्रीं श्री अन्तरिक्षनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
भूमि में मणि रतन कंचन, धातु खान सु जान है।
इन आदि और अनेक चिन्हसु, भीम के सब थान हैं।।
सो लखे ज्ञानोपयोग धारी, शुभ अशुभ जाने सही।
अन्तरिक्ष भीम निमित्त नीको, सो जजों बहु धुनि कही।।
ऊँ ह्रीं श्री भीमनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मनुष तिर्यक देह के शुभ, अशुभ चिन्ह सु जानिये।
रस प्रकृति रुधिरादिक सुलखिके, अशुभ शुभ पहिचानिये।।
यह अंगनिमित्त जु ज्ञान अद्भुत महासुख उपजायजी।
मैं जजों ज्ञानोपयोग ऐसो, भलो अरघ मिलायजी।
ऊँ ह्रीं श्री अंगनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सुन शब्द नर तिर्यंच केरा, शुभाशुभ जाने सही।
खर शब्द घूघू काक स्याल सु सारसा जो धुन कही।
इन आदि वच सुनि कहे सुखदुख, स्वरनिमित्त सु जानिये।
मैं जजों यह उपयोग ज्ञानी, शीश नय थुति आनिये।।
ऊँ ह्रीं श्री स्वरनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो मसा तिल सिर पीठ दाढ़ी, पांव कर में जोय है।
तिस निमित्त ज्ञान सु सकल जाने शुभाशुभ जो होय है।।
यह ज्ञान व्यंजन निमित नीको, भला शुभ उपयोग है।
मैं जजों मनवचकाय शुध करि, जान सुखदा भोग है।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंजननिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तन विषैं स्वस्तिक कलश वज्र, सु, मच्छ इन आदिक सही।
शुभ होय लक्षण देख इनको, शुभाशुभ भाखे कही।।
यह ज्ञान लक्षण निमित्त आछ्यो, भाले फल को दाय है।
सो जजों मनवनकाय यह, उपयोग ज्ञान सु भाय है।।

ॐ ह्रीं श्री लक्षणनिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तँह पट आभूषण शीश करके, उर पगों के जानिये।
तिनको सु काटे मूषिकादिक, भेद तिनको आनिये।।
यह देख शुभ अरु अशुभ भाखे, भेद सुख दुख दाय जी।
यह छिन्न निमित उपयोग जानो, जजों मनवचकाय जी।।

ॐ ह्रीं श्री छिन्ननिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो लखें सुपना शुभाशुभ को, भेद सुखदुख जान है।
इन आदि अंग अनेक समझे, सकल भेद सु आन है।।
यह ज्ञान स्वप्न निमित्त नीको, बड़ अतिशय धारजी।
सो जजों ज्ञानोपयोग मनवच, काय सुखमय सारजी।।

ॐ ह्रीं श्री स्वप्ननिमित्तज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

अन्तरिक्ष फिर भौम अंग सुर व्यंजना, लक्षण छिन्न जु सुपन निमित्त वसु भ्रम हना।
इनका चितवन दिना रैनि सो भाय है, ज्ञानोपयोग सु जजों अरघ शुभ जाय है।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगनिमित्तश्रुतज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

अब अवधिज्ञान विचार निशदिन भले भाव लगाय है।
तिसरूप ही उपयोग वरते, तत्त्वीभेद सु पाय है।।
इस ज्ञान के त्रय भेद अद्भुत, मूरती सब ही लखे।
यह जान ज्ञानपयोग अवधि,सु, जजों ज्यों बहु अघ सुखे।।

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यह जानि देशा-अवधि षट् विध, कौन इन महिमा कहे।
सब लोकमें हो मूरती द्रव्य, भेद ताको सब लहे।।
इस रूप जो उपयोग वरते, तत्व-ज्ञान बतावता।
सो जानि ज्ञानपयोग पूजों, भली विधि जस गावता।।

ॐ ह्रीं श्री देशावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुन अवधि परमा अधिक जाने, तास की महिमा घनी।
द्रव्यक्षेत्र काल सुभाव सबही, जान हैं गुण के धनी।।

जाने असंख्या लोक खेतर, मूरती विधि सोय है।
मैं जजों ज्ञानपयोग विधितें, नहीं तँह दुख कोय है।।
ऊँ ह्रीं श्री परमावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
परमावधीतें अधिक जाने, द्रव्य क्षेत्र व काल की।
सर्वावधी सो जान भविजन, छिपे नाँही बाल की।।
जाने असंख्या लोक अधिके, काल भी संख्या गुना।
तारूप जो उपयोग वरते, ज्ञान सो पूजों मना।।
ऊँ ह्रीं श्री सर्वावधिज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जो सरल रूचीचितचिन्तित जान है त्रयकाल की।
सो ऋजू मनपरजय सुज्ञानी, पूज्य जग गुन पालकी।।
ता रूप जो उपयोग बरते, ज्ञान सुखदा सारजी।
मैं जजों मनवचकाय नमि नमि, भक्ति मुखतें धारजी।।
ऊँ ह्रीं श्री ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
सरल मन व वक्र मनकी, शुभाशुभ जो भावना।
ते होय निज पर जीव विकलप, भेद सो सब पावना।।
जो विपुल मनपर्यय सुज्ञानी रहे समभावन सही।
ते जजों ज्ञानपयोग मनवचकाय, नमि नमि थुति कही।।
ऊँ ह्रीं श्री विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

केवलज्ञान महान सकलविध जान है, ज्यों ज्यों भइ व होय होयगी मान हैं।
मूरति और अमूरति काल अनन्त को, जानत सारी बात जजों अरिहन्त को।।
ऊँ ह्रीं श्री केवलज्ञानोपयोग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द

भेद और अनेक हैं सो, सकल जिनधुनि में कहै।
यहां अल्प से व्याख्यान मांही, कथन-प्रयोजनवान है।।
उपयोग भेद अपार जानो, भेद को पावे सही।
वश भक्ति द्रव्य मिलाय पूजों, ज्ञान केवल शिव मही।।
ऊँ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै महाघ्र्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला दोहा

ज्ञानाभ्यास सदा करे, मनवच काय लगाय। अन्तर कहुँ पावे नहीं, ज्ञानपयोग सु पाय।।
ज्ञानपयोग निरन्तर ध्यावे, धरमध्यान में काल गमावे।
ज्ञानाभ्यास तुल्य वृष नाहीं, सब धर्मन में यह अधिकाही।।
ज्ञानाभ्यास तत्त्व बतलावे, ज्ञानाभ्यास ध्यान उपजावे।

ज्ञानाभ्यास विराग बढ़ावे, ज्ञानाभ्यास मोक्ष उपजावे।।
ज्ञानाभ्यास थकीजग-पूजा, ज्ञानाभ्यास थकी अघ धूजा।
ज्ञानाभ्यास त्यागबुधि लावे, ज्ञानाभ्यास दोष सब ढावे।।
ज्ञान गुणाकर ज्ञान वंधावे, ज्ञानाभ्यास मुक्ति परणावे।
ज्ञान सकलसन्तनको प्यारा, ज्ञान सर्व जगमांहि उजारा।।
ज्ञान सूर्य मिथ्यातम नासे, ज्ञानमेघ भवतप को फांसे।
ज्ञान सकल संशय को खोवे, ज्ञान पापमल को सब धोवे।।
ज्ञान क्रोधवन्ही को नीरा, ज्ञानतरु संजम पय वीरा।
ज्ञानाभ्यास जगत का बन्धू, ज्ञानाभ्यास हरे दुख अन्धू।।

सोरठा

ज्ञानाभ्यास सदीव, सुखदाई संसार को। तातें कर भवि जीव, जो चाहे समभाव को।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानोपयोग भावनायै पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

5. संवेग भावना पूजा

अडिल्ल

यो जग दुखभण्डार, रोगशोकै भर्यो, ताको लख भवि जीव, भयानक चित कर्यो।
भवदुखतें भय खाय, विरक्ति तनतें करे, सो संवेगता थाप, जजों भव-तप हरे।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(बेसरी छन्द)

क्षीरोदधि का जल ले आई, कनकझारि भर चित हरषाई।
भाव संवेग पूज हों भाई, भव दुख फेर होय ना आई।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन नीर थकी घस लाया, शुभ पातर धरि अति हरषाया।
भाव संवेग पूज हों भाई, ताफल जग आताप नसाई।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफल सम प्यारे, हरष धारि पातर में धारें।
भाव संवेग पूज हों भाई, ताफल अक्षय पद उपजाई।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु फूल लाय गंध धारी, माल करी शोभा अतिभारी।
भाव संवेग पूज हों भाई, ताफल कामनाश हो जाई।।

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस नैवेद्य बनाया, कनकपात्र भरि आनंद पाया।
भाव संवेग पूज हों भाई, ताफल भूख रोग नस जाई।।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दीपक रतन जोत परकासी, सो भरथाल भक्ति सुख भासी।
भाव संवेग पूज हों भाई, तातें मोह निशा नस जाई।।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
धूप अगर चन्दन की आनो, वन्ही खेय हरष अति मानो।
भाव संवेग पूज हों भाई, तातें अष्टकर्म जरि जाई।।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफल लोंग बदाम सुपारी, खारक पिस्तादिक फलभारी।
भाव संवेग पूज हों भाई, मोक्षथान ताके फल पाई।।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
जल चन्दन अक्षत सुम लाई, चरु दीपक फल धूप सुभाई।
भाव संवेग पूज हों भाई, अभयधाम ताफल मिल जाई।
ॐ ह्रीं श्री संवेग भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं

(बेसरी छन्द)

यह संसार महा भयकारा, चारगती दुखरूप भंडारा।
याते विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।
ॐ ह्रीं श्री संसारमयभीतायै भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
देव मरणकालें दुख पावे, ज्ञानी सो गति भूल न चावे।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।
ॐ ह्रीं श्री देवगतिदुःखभीतायै भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मानुषगति अति दुखका भारा, यातें ज्ञानी को भयकारा।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।
ॐ ह्रीं श्री मनुष्यगतिदुःखविरक्तायै भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
नारकगति वेदन लख भाई, ज्ञानी पाप थकी भय लाई।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।
ॐ ह्रीं श्री नरकगतिदुःखविरक्तायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
पृथ्वीकाय तने दुख भारी, छेदनभेदन अति दुखकारी।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।
ॐ ह्रीं श्री पृथ्वीकायदुःखविरक्तायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जल के दुखकी का मुख गावे, जाने सो जिय पाप कमावे।

यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।

ॐ ह्रीं श्री जलकायदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकाय दुख ही का गेहा, यातें किम उपजे मन नेहा।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।

ॐ ह्रीं श्री अग्निकायदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पवनकाय में दुख अति भाई, हाथ पांच लागे क्षय जाई।
यातें विरचि धरम दृढ़ लागे, सो संवेग जजों भव भागे।।

ॐ ह्रीं श्री पवनकायदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल

छेदनभेदन ताड़न मर्दन दुख घने, और महादुख जान जाँय ते किम् गिने।
वनस्पती दुख जोय पापभय चित धरे, सो संवेग जु भाव जजों भवभ्रम हरे।।

ॐ ह्रीं श्री वनस्पतिकायदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

एक स्वास में बार अठारह जो मरे, एकै स्वासै मांहि अठारह तन धरे।
ऐसी वेदन लख निगोदके मांहिजी, हो भयभीत सुजजों संवेग जु ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री निगोददुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वे-इन्द्री लट जोंक गिंडोला अलसिया, बाला कौड़ी संख आदि दुख में हिया।
इनकी वेदन देख चित्त भय लाय है, सो संवेग जजों लख अघ थर्राय है।।

ॐ ह्रीं श्री द्वीन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चींटी खटमल जुआं तिरूला जानिये, और कुंथवा आदि त्रीन्द्रिय मानिये।
या गति वेदन जोय पाप तज वृष धरे, सो संवेगता जजों जगतभय थरहरे।।

ॐ ह्रीं श्री त्रीन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

माखी मच्छर भ्रमर और टीडी सही, डांस पतंगा आदि जीव चब-अख कही।
इन तन वेदन जोय पापभय लाय है, सो संवेगता भव जजों वृषदाय है।।

ॐ ह्रीं श्री चतुरिन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हाथी घोड़ा देव मनुज नारक सही, सिंह सूर मृग आदि और पंच अख कही।
ताकी उत्पति मृत्यु देखि भय लाय है, सो संवेग जजों वृषधरि हरषाय है।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जनम राग दुख करे मीत उर इमि सहे, तल सिर ऊपर पांव लिप्त मलतें रहें।
इत्यादिक दुख जनम जान विरकत सही, सो पूजों संवेग भाव शिवदा मही।।

ॐ ह्रीं श्री जन्मदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू लाखों डसे तुल्य दुख मरण का, इने आदि दुख और कालवश परनका।
मरण महादुख जान जीव विरकत सही, सो पूजों संवेग भाव शिवदा मही।।

ॐ ह्रीं श्री मरणदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

इष्ट वस्तुवियोग का दुख, जगत में भरपूर है,
धन पुत्र नारि पितादि सज्जन, मरणबार हूँ दूर हैं।
इन आदि इष्ट पदार्थ विनसे, देख जो विरकत सही,
सो पूजि हों संवेग भावन, ताहि में यह दुख नहीं।।

ॐ ह्रीं श्री इष्टवस्तुवियोगदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो मिले वैरी सिंह सूर अरु, जीव दुष्ट अनेकजी।
यह है अनिष्ट संयोग का दुख, कहे तिनको टेकजी।।
इन आदि कारण और दुख को, जानि के विरकत भये।
सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये।।

ॐ ह्रीं श्री अनिष्टवस्तुवियोगदुःखविरक्ततायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तन रोग पीड़ा होय बहुती, कण्ठ तन आयुध लगे।
नित स्वास कास जलोदरा तन, आयतें पीड़ा जगे।।
इन आदि पीड़ा मिलन के दुख, जानके विरकत भये।
सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये।।

ॐ ह्रीं श्री पीड़ासंयोगदुःखरहितायै श्रीसंवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इन आदि कारण और दुख के, जगत में पूरण सही।
तिस सहित चउगति जीव भरिये, देखिये सबही मही।।
इमि जान विरचे जगत सेती, धर्म में अति दृढ़ भये।
सो जजों भाव संवेग मनवच, तासफल बहु शिव गये।।

ॐ ह्रीं श्री अनेकदुःखमयजगदबलोकनरहितायै श्री संवेगभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

अथिर दशा संसार की, देख जु भये उदास। भये मगन निजरूप में, करें स्वगुण परकास।।

(बेसरी छन्द)

जग लख चपल भव बैरागे, तब आतमरस माँही लागे।
भव में जाने दुःख अपारा, सो संवेग भाव जग न्यारा।।
मात तात सुत सज्जन भाई, नारी आदि और सुखदाई।
ये सब स्वारथ के लख सारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।
तन धन राजलक्ष्मि क्षयकारी, बिजली जिसी चपल है सारी।
राखी रहे न इक छिन प्यारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।
देव इन्द्र का सुख नश जावे, खन चक्रीपद देखत ढावे।
इमि लखि जगत महादुखकारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।

काल अनादि जगत भरमाये, नानातन धरि अति अकुलाये।
लखानसुख सब दुख का भारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।
पाप किये जिय नरक सिधायो, या तिर्यंची विषें दुख पायो।
अब ओसर नीका है प्यारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।
पुण्य उदय नर देव बनाया, तंह मनवांछित बहु सुख पाया।
सो भी भये देख क्षयकारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।
कौन महादुख जग के भाखे यह जिय इन्दी सुख अभिलाखे।
तातें तजों जान क्षयकारा, धर संवेगभाव जग न्यारा।।

दोहा

जग दुखरूप विचार, विरचे भवतें साधवा। जगसुख नाशि विचार, पूजों मैं संवेगता।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

6. त्याग भावना पूजा

सोरठा

त्याग-भावना सार, भवदधि नौका जानिये। इमि लखि मनवच धार, थापन कर पूजों सही।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

पद्धरि छन्द

जल कनकझारि धरि भाव लाय, अति उज्जवल क्षीरसमुद्र भाय।
पूजों सु त्याग भावन महान, ताके फल जनमजरा न जान।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन घसि निर्मल नीर लाय, धरि कनकपात्र में भक्ति भाय।
पूजों सु त्याग भावन महान, ताके फल भवतप नाँहि जान।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय मुक्ताफल से बखान, बिनखण्ड गन्ध उज्जवल महान।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताफल अखण्ड पद होय आय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सम कलपतरु गंध वर्ण धार, तिनकी करि माला भक्ति सार।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल काम न जोर पाय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस नैवेद्य बनाय सार, धरि सुभय पात्र में हरष धार।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताफलें क्षुधागद तुरत जाय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिमय अति जोतरूप, धरि थाल आरती कर अनूप।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल मिथ्यातम नसाय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर धूप अगर चन्दन सुगन्ध, वन्ही में खेऊँ भगनि बन्ध।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल क्षय को कर्म जाय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल बदाम खारक अनूप, पुंगीफल आदिक ले सुरूप।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पावें मोक्ष ठाँय।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सुमन सार, चरु दीप धूप फल अर्घ्यकार।
पूजों सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पदवी सुभग पाय

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं

(चौपाई)

रोगी की शुभ भेषज देय, सब जिय साता बांछे तेय।
औषधिदान तासको नाम, सो भी देनो शिवपुर काम।।

ॐ ह्रीं श्री औषधिदानभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सबको हितदा ज्ञान विचार, दे श्रुतदान महाबुध धार।
सबको चाहे केवलज्ञान, सो ही ज्ञानदान हितदान।

ॐ ह्रीं श्री शास्त्रदानभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आप समान सकल जिय जान, अभयदान दे सबको मान।
दयाभाव राखे मन माहिं, अभयदान सो भाव जजाहिं।।

ॐ ह्रीं श्री अदयात्यागायै अभयदानभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन देय कायथिति काज, मुनिकों भक्ति दया सुख साज।
यथयोग्य जे दान कराय, सो अनदान सकल सुखदाय।

ॐ ह्रीं श्री आहारदानभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये ही दान चार विध जान, त्याग-भावना में पहिचान।
तीर्थंकर पद दाय बताय, सुरतरु-सम जिनवाणी काय।।

ॐ ह्रीं श्री चतु. प्रकारदानभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

करुणासागर दीनदयाल, सब जीवन के हैं प्रतिपाल।
त्याग जीव की घात सयान, सो व्रत जजों अर्घ्य ते आन।।

ॐ ह्रीं श्री हिंसात्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्राण जांय तो झूठ कहे, महाधीर सतवादी रहे।
सत्यवचन सब धर्म महान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन।।

ॐ ह्रीं श्री असत्यत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

परधन-ग्रहण महा अघ जान, छूवें नहीं दया की खान।
चोरी त्याग होय गुणथान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन।

ॐ ह्रीं श्री चैर्यत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नारी चार जाति की सोय, देव मानुषी आदिक होय।
चारों मन वच त्यागी जान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन।

ॐ ह्रीं श्री कुशीलत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह त्याग करे जिस सोय, जाके शिव की वांछा होय।
पापकार आरम्भ पिछान, सो व्रत जजों अर्घ्यतें आन।

ॐ ह्रीं श्री परिग्रहत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तनतें ममता-भाव निवार, शिव के हेत नगनपद धार।
सहें परीषह खेद न लांय, तनुविरक्त के पूजों पांय।।

ॐ ह्रीं श्री तनुममत्वत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोग सम्पदा सकल निवार, सहस छ्यानवे सुरसी नार।
सब तजि मोक्ष भावना भाय, सो त्यागी पूजों मन लाय।।

ॐ ह्रीं श्री राजभोगत्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इत्यादिक त्यागी जे होंय, शिववांछक जियरक्षक सोय।
भवत्यागी रागी निर्वान, सो मैं जजों त्याग भवहान।।

ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा

त्याग मोक्षमग लोय, जगत पूज्य त्यागी सही। बिना त्याग भव होय, तातें त्याग जजों सही।।

मुनियानन्द की चाल

त्यागभावन बिना, मोक्ष जावना नहीं, त्याग ही मोक्षमग, जान सब श्रुत कही।
त्याग मोह हरन को, महाभट जानिये, त्याग ही मूल समता तनो ठानिये।।
त्याग ही कर्मगिरि, वज्रसम है सही, त्याग मनविकलता रोकने पटु कही।।
त्याग शिवदायको जान मन लाइये, त्यागके बल थकी, कर्मदेव जालिये।
त्यगा मुनिराज को, भलो भूषण सही, त्याग को नमे सुर, खगा चक्री मही।
पूजि हैं त्याग को, इन्द्र थुति लायजी, मैं जजों त्याग मन, वचन तन आयजी।।
त्याग विनराग होत कर सके सोहनो, रागजुत जीव को, हार भागे मनो।
त्याग कल्पवृक्षसम देय वांछित सही, त्याग इमि जानि मैं, जजों सिर दे मही।।

त्याग त्रिभुवन विषें, सार धर्म अंग है, त्याग के जोर तें, होय कर्मभंग है।
त्याग को देख का-सुर नरा धूजि हैं, त्याग को मैं जजों, और भवि पूज है।।।
त्यागफल उदयतें, होय है आय जी, इंद्र वा देव खग चक्रधर थाय जी।
मोक्ष ताही भवे, तथा कर्म तें लहे, मैं जजों त्यागभवि, जजों जिनधुनि कहे।।
त्याग जग पूज्य है, त्यागधर पूज्य जी, त्यागतें अवधि मनपर्ज सब सूझ जी।।
त्याग तारे समुद्र, जगत अति दुद्धरा, मैं जजों त्याग को, और पूजो नरा।।
त्याग खोटे किये, कर्म को झट हरे, त्यागतें सुभट मन, और इन्द्री मरे।
त्याग ही मरण का, भय निवारे सही, मैं जजों त्याग को, मनवचन तन कही।।

दोहा

त्याग तरन तारन सही, त्याग जगत गुरु सोय। मैं पूजों मन वचन तन, त्याग भावना जोय।।
ॐ ह्रीं श्री त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यम्।

7. तपो भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

तप ही वज्रसमान, पापगिरि को सही, तप ही भवदधि-नाव, धरे शिव की मही।
तप ही भव शरण, हरे भव दुख सबै, सो तप मैं इहां थापि, जजों मन वच अबै।।

ॐ ह्रीं श्री तपो भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री तपो भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री तपो भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(गीता छन्द)

पदमद्रह को नीर निर्मल, कनकझारी में धरों।
उर भक्ति करि गुण गाय तपके, शीशतें नमकी करो।।
इह भली भावन तप सु केरी, कौन उपमा गाय है।
मैं जजों तप मनवचन काय, तीर्थपद की दाय है।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

घसि अगर चन्दन नीर सेती, महागँध का भारजी।
मैं कनकझारी मांहि धरिहों, नमों तप गुन धारजी।।
ताफलै भव आताप नाशे होय समता भाय है।
मैं जजों शुभ तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित धवल नखसिख, शुद्ध गन्ध मई कहै।
धरि सुभग पातर भावनातें, आपने कर में लहै।।
पद अखय पावन चाह मेरे, तास यों मन भाय है।

मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल चांदी कनक के करि, तथा सुर तरु के सही।
करि माल नीकी शोभदाई, भ्रमर गुंजत गंध मही।।
तिस देख कम्पै मदन को उर, यह चढ़ी जिनपाय जी।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
नैवेद्य षटरस सार मोदक, तुरत के बनवाय जी।
तिस देख उर अनुराग उपजे, क्षुधारोग नसाय जी।।
तब होय निर्वाछक स्थिर हो, ध्यान स्थिर थाय है।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
करि दीप मणिमय नाश तम को, कनक थाली में धरों।
कर आरती शुधभाव सेती, भक्ति बहु मन में करों।।
ताफलै तुरत अज्ञान जावे, ज्ञान परगट भाय है।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
धूप दशधा गन्ध धारी, अग्निमधि जारों सही।
उर हरष करले आप करमें, कर्मरिपु मारों सही।।
तब होय शिवपद कर्म नाशे, तास यह विधि पाय है
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
ले लौंग खारक और श्रीफल, जान सुभग बदामजी।
फिर जान पिस्ता आदि नीका, भला फल अभिराम जी।।
ताफलै शिवफल होय निश्चल, और बहु कहा गाय है।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
जल गन्ध अक्षतफूल चरु ले, दीप धूप फला सही।
कर अर्घ्य आठों द्रव्य ले के, महाशुभफल की मही।।
ताफलै अद्भुत होय फल सो, कौन मुखतें गाय है।
मैं जजों शुध तप भावना को, तीर्थपद की दाय है।।
ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं

(सोरठा छन्द)

जो करना उपवास, एक दोय पख मास के।
सो अनशन तप नाम, मैं पूजों जल आदिते।।

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूख थकी लघु खाय, अर्ध तथा दोय ग्रासजी।
सो ऊनोदर भाय, मैं पूजों जल आदितें।।

ॐ ह्रीं श्री ऊनोदरतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रोज वस्तु परमान, राख लेय दृढ़ भावतैं।
सो व्रतसंख्या जान, मैं पूजों जल आदितें।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यानतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रोज रसन को त्याग, षट रस वा दो एक जी।
रसपरित्यागव्रत लाग, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आसनादि दृढ़ भाव, नांहि छले खग देवतैं।
सो शय्यासन चाव, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्त शय्यासन तपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निमित्त कष्ट को लाय, समता भवन जो रहे।
काय क्लेश सु भाय, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री कायक्लेशतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये तप बाह्य बखान, जगतपूज्य फल दें सही।
महा उच्च गुणजान, ते पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री बाह्यषट्तपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लगे दोष शुध होंय, जाने सो गुरु दे सही।
सो प्रायश्चित जोन, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्ततपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विनय करे गुरु देव, धरम तथा धरमी तनों।
सो तप विनय स्वमेव, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के चम्पै पाव, जो तन में तप खेद हो।
सो वैयावृत भाय, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निशदिन जिनधुनि पाठ, पूछे सुनि चितवन करे।

सो स्वाध्याय तप ठाठ, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तनतें ममत निवार, इक थल तिष्ठै धैर्यसो।

सो व्युत्सर्ग तप सार, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच तन इक ठाम, चिंते वृष शुध भावना।

ध्यान तिको शुभ नाम, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये तप द्वादश जान, दुविध महा अघ के हरा।

कर्मन वज्र-समान, मैं पूजों जल आदितैं।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपोभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला बेसरी (छन्द)

जा, तप कर हरे अध सारा, होयसकल कर्मनते न्यारा।

ये तप परभव के सगसाथी, ये तप कर्मदलन को हाथी।।

तप ही भवदधि नाव बताया, तपबलतैं सबने शिव पाया।

तप की अग्नि दहै विधिकाठा, तपतें रहे नहीं अरि आठा।।

तप की चाह करें सुरपति से, तपकों राज तजें नरपति से।

तप को जजे वो हि तप पावे, तप बिन प्राणी जगत भ्रमावे।।

तप दे कल्पवृक्ष मन चाया, तप आगम में बन्धु बताया।।

तप को तपें कीर्ति को पावें, कनक जिसो बन्हीं संग थावे।।

तपको चहे चित्त भर प्रानी, तपको करे तिनै धुनि जानी।

तपको पूजे सो तप चेरा, तप धारें सो साहिब मेरा।।

मैं तो तप की सेव कराऊं, कब तप मिले भावना भाऊं।

जबलों मिले नहीं तप त्राता, तबलों मैं तप पूजों भ्राता।

तप का शरण भवान्तर पाऊं, तप को भव भव में सिर नाऊं।

तप ही तें गुरु देव कहावे, तप जगबन्धु सकल सुख पावे।।

दोहा

तरुणपने तप जे धरें, तिरें नेम जिन जेम। तातें मैं तपकों नमों, वसु द्रव ले धर प्रेम।।

ॐ ह्रीं श्री तपोभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

8. साधुसमाधि भावना पूजा

दोहा

जा विध मुनि को सुख बढ़े, साधु समाधि सुजान। सो मैं इत थापन करों, पूजों मन वच आन।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(चौपाई छन्द)

नीर निरमले गंगा तनो, सो मैं कनकझारि ले घनो।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल मिटे कर्म को दाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन नीर घसाय, रतन-ज़डित झारी धर लाय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल भव आताप नशाय।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल मोती समा, सुभग रकेबी में धर रमा।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताके फल अक्षयपद पाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल भले सुरतरुके लाय, गूंथी माल भक्ति मन लाय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल मदननाश का पाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबिध रस नैवेद्य बनाय, उज्जवल पातर ले हरषाय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल क्षुधानास को पाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिमय थाल भराय, मनवचतन करि भक्ति बढ़ाय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल नाशे मिथ्या दाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जु दसविध गन्ध मिलाय, अग्नि विषें खेऊं मनभाय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल अष्टकर्म-क्षय जाय।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोंग बदाम अपार, खारक आदि और फल सार।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल सिद्धिथान-फल पाव।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सुमलेय, चरु अरु दीप धूप फल जेय।
पूजों साधुसमाधी-भाव, ताफल अद्भुत फल उपजाय।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधि-भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं (चौपाई छन्द)

मूलगुणों में जो अतिचार, लागे जाहि यती कों सार।
सो पुलाक मुनि सातादाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री पुलाकमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन मांहि कछू रति लहे, वकुश जाति सो मुनिवर कहे।
तिनकी सातविध मन लाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री वकुशमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कुशील कहे जुग भेद, इक कषाय प्रति सेवन वेद।
तिनकी साता विधि मन लाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरगुन में कछु अतिचार, सो प्रतिसेवन साधु विचार।
तिनको सातविधि मन लाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिसेवनाकुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दशमें गुणथानक लों सही, तबलों मोह उदय अस कही।
सो कषाय कुशील मुनिराय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री कषायकुशीलमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब जिस मुनिका केवल होय, साधु नातक कहिये सोय।
तीन लोक पूजन मन भाय, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री स्नातकमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये पांचों मुनि हैं शिवनाव, सबही नगन जानकर ध्याव।
शिवनायक दायक शिवभव, साधुसमाधि जजों सुखदाय।।

ॐ ह्रीं श्री पंचप्रकारमुनिसाधुसमाधिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (मुनियानन्द की चाल)

भावना साधु-समाधि सो जानिये, जती तन विषें सुख, होय जिमि ठानिये।
रोगवश मुनि मन, नांहि थिर होयजी, रोगविधि नाश ऋषि, ध्यान शुध जीवजी।।
देव खग नरा पशु, दुष्ट जो दुख करें, ताहि जो दूर कर, मुनिको सुख भरे।
जती समभाव शिव-साधना लाय है, साधू-समाधि सो, भावना भाय है।।
साधु की भक्ति शिव, शाश्वती देतजी, साधु साता हरे, जगत फेरा सही,
साधु की भक्ति शुद्ध, ठाम की है मही, साधु सुख बंधै को, काज सो कीजिये।
साधु की सेवतें, सासते जीजिये, मैं सदा साधु का, भक्ति चाहों सही।
होय मोकों शरण, आगले भव मही, साधु को सुख करे, तिको निज अघ हरे।
साधु की विनयजुत, वेदना क्षय करे, साधू समाधि सो, भावना जानिये।
तास फल तीर्थपद, करम को हानिये।।

दोहा

साधु समाधी भाव को, जो भावे-भवि कोय। जो साधू को सुख करे, सो तीर्थंकर होय।।

ॐ ह्रीं श्री साधुसमाधिभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

9. वैयावृत्य भावना पूजा

गीता छन्द

मुनिराज को मग चलत मन में, खेद जब उपजे सही।
वा घने तप के जोर सेती, काय कछु खीनी भही।।
ता समय दावे पांव सिर कर, भाव या विधि जो करे।
सो जान वैयावृत्य पूजो, थाप यहां जो अघ हरे।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

नाराच छन्द

निरमलो सुनीरलाय, कनकमारिका धरों, अति सुगन्ध क्षीरपय, तास मांहि ये करों।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर मांहि बावनो, सुचन्दना घसाय हों, धरों सुकनकझारिका, महा सुभक्ति भाय हों।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षता अखंड खंड-नांहि उज्ज्वला सही, महासुगन्ध सोहना सुभक्तिभला ज्यों कही।
जजो सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भले सुफूल गन्धधार, देवद्रुम के सही, करी सु माल पोय गूंथ भावभक्ति ले ठही।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें तु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

लिये भले सुमोदकादि, तुरतके किये सही, धरे जु पात्रमांहि भाव, भक्ति ले हिये सही।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें तु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीपिका बनाय रत्न, अन्धके विनाशिया, भले सुपात्र माँहि धार, ज्ञान का विकासिया।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें तु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

लई जु धूप गन्ध सार, भ्रमर को भ्रमावनी, सुखेय वन्हि मांहि ताहि, भाव की बंधावनी।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफला बदाम लोंग, आदि जे फला सही, धरे जु पान मांहि भक्त, भावना हिये कही।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जला सुगन्ध अक्षता, भले जुपुष्प जानिये, चरूसु दीप धूप फला, अर्घ्य ले आनिये।
जजों सुभाव वैयावृत्य, भावना सुभाय है, फलें सु तास लहे तीर्थ-पदी की उमा यहै।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं

चौपाई छन्द

गुण छतीस के धरक सोय, संघनाथ आचारज होय।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पचीस धारनहार, उपाध्याय शिक्षा-दातार।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यार्यवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तप जो दुद्धर बहुविध करें, तपसि जात मुनि ते अघ हरे।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्विवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर से जो पढ़े सुजान, शैक्ष्य जाति सो मुनि पहिचान।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री शैष्यजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रोगसहित तन समताभाव, सो गिलान मुनि भवदधि नाव।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री ग्लानजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वयकरि बड़े तथा गुण चढ़े, इनका सँघ सो गण मुनि बड़े।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री गणवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा दायक स्नातक जोय, ते कुलजाति-मुनी अवलोय।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुलवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आर्या श्रावक श्राविका, इनको सँघ कहिये अघ थका।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री चतुःप्रकारसंघवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत दिनों के दीक्षित होय, साधुजाति-मुनि कहिये सोय।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री साधुजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान तपस्या में पटु भया, सो मनोज्ञ यति पावन थया।
इनको वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये दस जाति मुनी भवतार, इनकी सेव करे भवपार।
जो इन वैयाव्रत मन लाय, सो तीर्थंकर-पद फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री दशजातिमुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

वैयावृत सब व्रतन में, बड़ी वरत मन लाय। याकी सेवा जो करे, सो शिव पहुँचे जाय।।

(बेसरी छन्द)

वैयावृत्य धरम का मूला, वैयाव्रततें अघक्षय थूला।
वैयाव्रत कीजे गुरु केरा, तातें मिटे जगत का फेरा।।
वैयावृत महागुण प्यारा, वैयाव्रत भवदधि का तारा।
वैयाव्रत वृष अँग का डेरा, तातें मिटे जगत का फेरा।।
वैयाव्रत वृषबीज बताया वैयावृत जगबन्धू गाया।
वैयाव्रत-सा धन नहिं नेरा, तातें मिटे जगत का फेरा।।
वैयाव्रत आभूषण जाके, जा सम शोभा और न काके।
वैयाव्रत दुख बन्ही नीरा, तातें मिटे जगत की पीरा।।
वैयाव्रत जाके ऊर आवे, सो जिय सब सज्जन मन भावे।
वैयाव्रत सब दोषनिवासी, या फल जगलक्ष्मी हो दासी।।
वैयाव्रत तें वैर नसावे, वैयावृत जगनेह बढ़ावे।
वैयाव्रत को जो भवि पासी, ताफल हो जगलक्ष्मी दासी।।
वैयाव्रत जाके मन मांही, सो जगपूज्य कहो जगठांडी।
वैयाव्रत को मैं सिर नाऊँ, ताके फल जगमें न भ्रमाऊं।।
वैयाव्रत सब धर्म निशाना, वैयाव्रत तें होय मनाना।
ताफल लहें हिये में ज्ञाना, तातें वैयाव्रत परधाना।।
वैयाव्रत तप में परधाना, वैयाव्रत में भवदधि हाना।
वैयाव्रत शिवराह बतावे, वैयाव्रत को जग जस गावे।।
वैयावृत्य छिनक अधमारा, वैयाव्रत सन्तन को प्यारा।
वैयाव्रत सा और न मिन्ता, वैयाव्रत मेटे भवचिन्ता।।

दोहा

वैयाव्रत में गुन घने, कबलों कहों बनाय। तातें मुनितन टहल को, करो सुमन वचकाय।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

10. अर्हद्भक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रातिहार्य वसु नान्त चतुष्टय जानिये, दस जन्मत दस केवल उपजत मानिये।
चौदह देवा करें सकल छ्यालीस गुन, इन जुत अर्हत जजों थाप इहां शुद्ध मन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(चौपाई)

पद्मकुण्ड को निर्मल नीर, कनझारिका धरिमन धीर।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन बावन नीर घसाय, रतनजड़ित झारी भर लाय।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत उज्ज्वल खण्ड न कोय, कनकथाल में धर शुध होय।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
देवद्रुम के फूल सुलाय, माला कर सेवों जिन पाय।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
नानारस नैवेद्य करेय, मोदक आदि सुभग कर लेय।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दीपक रतनमई कर लिया, सुभगथाल भर सनमुख भया।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
धूप दशांग बनाय सु प्यार, बह्निमध्य जारो मजधार।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफल लौंग बदाम अनार, खारक पुंगीफल ले सार।
पूजों मन वच भक्ति लगाय, अर्हद्भक्ति भावना भाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सुमलेय, चरु दीपक सुधूप फल लेय।
अर्घ्य बनाय शीश का नाय, पूजों अर्हद्भक्ति सुभाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं (अडिल्ल छन्द)

वृक्ष अशोक सुजान ताहि देखे सही, रहे नहीं उर शोक होय उर सुख कही।
याके धारी अर्हद् देव महान हैं, पूजों अर्हद्भक्ति भाव गुनथान है।।

ॐ ह्रीं श्री अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव पहुप की वृष्टि करें थुति लायके, नभतें आवे जेम रतन से भायके।
मानों ज्योतिष देव भूमि पै आय हैं, इन जुत देव नमों सुभावना भाय हैं।।

ॐ ह्रीं श्री शुभवृष्टिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

खिरे दिव्यधुनि सारसु जिनवर की सही, प्रातिहार्य यह जान सकल जिय हित मही।
या जुत अर्हद्देव भक्ति शुभ भावना, मैं पूजों थुति आन अर्घ्य धर पावना।।

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल जिमि गंगधार रतनमयी सार जी, चंवर सुढोरें देव भक्ति के लारजी।
प्रातिहार्य यह इन जुत अर्हद्देवजी, ताकी भक्ति सुभावन करिहो सेवजी।।

ॐ ह्रीं श्री चामरप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सिंहासन जिमि मेरु रतन करकै जडवा, प्रातिहार्य जगपूज्य किन्हीं यह ना घडया।
इनके धारक देव कहे अरिहन्त जी, तिनके भक्ति सुभावन शिव को पंथजी।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके तनकी ज्योति-चक्र ताको सही, ताके देखे लखे पूर्वभव की मही।
प्रातिहार्य यह इन जुत अर्हद्देव जी, ताकी भक्ति सुभावन करहों सेवजी।।

ॐ ह्रीं श्री प्रभामण्डलप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव बजावें नभ में बहुविध बाजना, तिनकी धुनि चहुंओर महा अघ की हना।
प्रातिहार्य इन सहित देव अर्हत सही, इनको भक्ति सुभावन पूजों शुभ मही।।

ॐ ह्रीं श्री दुन्दुभिप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छत्र तीन सिर धरें जगतत्रय नाथजी, प्रातिहार्य जुत भले विराजे तातजी।
जगत देव अरिहन्त सुगुण के धार हैं, ताकी भक्ति सुभावन पूजों सार है।।

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयप्रातिहार्यसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धरै अनन्तो ज्ञान, लखे सब जग तनी, तीन काल की कथा, सकल जो जो बनी।
या अतिशयजुत देव जान अरिहन्तजी, तिनको भक्ति सुभावन सेवन सन्तजी।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तज्ञानसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देखे जो त्रयकाल पदारथ सकल ही, तिनकें छानी नाहिं सकल सुख की मही।
या गुण धारक देव कहे अरिहन्तजी, तिनको भक्ति सुभावन सेवत सन्तजी।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तदर्शनसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनन्त के धार जगत गुरु सार जी, अविनाशी दुख नाँहि भवोदधि-पारजी।
यह गुण अतिशय धार देव अरिहन्त जी, याकों भक्ति सुभावन सेवत सन्तजी।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तसुखसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनन्त के धार देव अरिहन्त जी, यह अतिशय इनमाँहि और नहिं अन्तजी।
इनकी भक्ति सुभावन सुख की दाय है, सो जन तीरथपद को निश्चय पाय है।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तबलसहितायै अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छन्द)

इन आदि अतिशय और सुखद, लहे तिनमें सारजी।
सो देव हैं अरिहन्त जग में, भविकजन के तारजी।।
इन भक्ति भावन जोकरे जिय, लहे जगथुति की मही।
अरिहन्तभक्ति सुभाव भावे, तें लहें शिव की सही।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (बेसरी छन्द)

अर्हद्भक्ति भाव जो भावे, सो उत्कृष्ट स्वपद को पावे।
अहद्देव महा गुण गेहा, देव जजें बहु कर कर नेहा।।
जनमत जो दस अतिशय पावें, ये गुण और न जन्मत पावें।
दस अतिशय पावें फिर देवा, केवलज्ञान हुये स्वयमेवा।।
चौदह अतिशय देव करावें, तिनकी महिमा किम मुख गावें।
आठ प्रातिहारज फिर होई, ये गुण प्रभू बिन लहे न कोई।।
अनन्त चतुष्टय मंगलकारी, सो गुण भी जिन के आधारी।
सब गुण मिल छयालीस धरैया, सो अरिहन्त देव जज भैया।।
या जिन सेव सकल अघ टारै, जिनकी सेव भवोदधि तारे।
अर्हत्सेव बिना सुख नांही, मोक्ष मिलेनहिं जिनथुति पांही।।
या प्रभू की सेवा मैं चाहूं, जिनथुति कर भव सफल कराहूं।
मो मन वांछा है यह भाई, अर्हद्भक्ति मिले सुखदाई।।
जबलों मोकों मोक्ष न होई, तुम थुति चहूं और नहिं कोई।
तातें अरज यही अरिहन्ता, आप भजन काटे जगतन्ता।।

दोहा

अरिहन्त इन गुणधार जों, भाव भक्ति इन भाय।
ताफल जिनपद पाय है सो मैं पूजों आय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हद्भक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

11. आचार्यभक्तिभावना पूजा

चाल जोगीरासा छन्द

द्वादस तप वृष दसविध, षडावश्य शुध भाई।
पंचाचारज तीन गुप्ति मिल, गुण छत्तीस कहाई।।
इनके धार अचारज सोई, इनकी भक्ति सुभावा।
सो इहां थाप जजों मनवचतन, मेटन भव का दावा।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(चौपाई छन्द)

नीर पदमद्रह को ले सार, मणिमय झारी तें कर धार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मन वच तन सोय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगर नीर घस लाय, शुभ पातर में धर उमगाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, मैं पूजों भव-दुखक्षय हाये।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत उज्ज्वल मोती जेम, सो मैं लेय धार कर प्रेम।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं अक्षय-फल होय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्ध वर्ण अधिकाय, कल्पवृक्ष के ले हरषाय।
आचार्यभक्ति-भावना साथ, पूजों मैं मनमथक्षय होय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

षट् रस कर नैवेद्य कराय, मोदक आदि महाशुभ भाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों रोग क्षुधा क्षय होय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप रतनमय ज्योति जगाय, कर्पूरादि बहुविध लाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं मिथ्यातम खोय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

दसधा धूप मिलाय सुगन्ध, अगनि मांहि खेऊं अघबन्ध।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं कम-क्षय होय।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लोग बदाम अनार, खारक पुंगीफल सुखकार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं शिवफलजिमि होय।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जलचन्दन अक्षत सुमसार, चरु दीपक फल धूप सम्हार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजों मैं अर्घ नाशै होय।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं (चौपाई छन्द)

तप द्वादश दो विध मनलाय, अन्तर बाहर भेद बताय।
इनको धरे आचारज सोय, ते गुरु जजों अरघतैं जोय।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इक उपवास मास पख जान, वर्ष आदि उपवास बखान।
इनको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भावशुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपः-सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भूख थकी लघु खावे सही, अवमौदर्य नाम तप यही।
इनको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री अनशनतपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नितप्रति वरत करे परमान, सो व्रतसंख्यातप अघहान।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतपरिसंख्यानतपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रोज रसनको त्यागे सही, रसपरित्याग नाम तप यही।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री रसपरित्यागतपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दृढ़ आसनलखके थितिकरा, विविक्तशय्यासन तप वोधरा।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री विविक्तशय्यासनतपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तनको कष्ट करे सम रहे, कायकलेश नाम तप यहे।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री कायकलेशतपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् बाह्य तनें तप जान, पापबेल हर करबत मान।
इनको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री बाह्यषट्तपः सहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लगे दोष को जो सुध करे, सो प्रायश्चिततप अघवन हरे।
याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्राश्यिचत्ततपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आप थकी गुरु का सत्कार, सोही विनय नाम तप सार।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि को खेद निवारन काज, हाथ पाँच चम्पैं गुरु राज।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निशदिन जिनवानी अभ्यास, सो स्वाध्याय महातपवास।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।?

काय ममत परिहार कराय, सो व्युत्सर्ग नाम तप भाय।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

थिर मन आर्तरोद्र परिहार, सो ही ध्यान नाम तप भाय।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये तप द्वादश शिवमग जान, तप के करत होय उर ज्ञान।

याको करें आचारज सोय, ते गुरु जजों भाव शुभ होय।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशतपःसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

सब जीवन के समता भावा, उत्तम धर्म सु शिवमग नावा।

याको आचारज तिन भावे, तिनपद जजों भाव शुभ ध्यावे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मानभाव सबही निरवारा, मार्दव धर्म जान यह प्यारा।

याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कुटिलाई जिनके नर नाँही, आर्जवभाव धरमहित ठाँही।

याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमार्जवधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्राण जांय पै असत न भाखे, सत्यधरम अपनो दिढ़ राखे।

याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

परकी वस्तु चाह नहिं ताके, शौचभाव निर्मल उर जाके।

याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय कसे जीवको पाले, सो संयमवृष अघ को टाले।
याको आचारज उर आने, तिनपद जजों फलैअघ हाने।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशतप दोविध मन लाय, सो तपधर्म स्वर्ग शिवदाय।
याको करे आचारज सोही, तिनपद जजों रहोंनहिं मोही।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपौधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तन धनआदि वस्तु पर जेती, ममत नहीं दीसे तन सेती।
यो तप त्याग आचाराज धारें, तिनपद जजों फलै अघ हारे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमत्यागधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दो विधिपरिग्रहत्यागसु नगना, सोहि अकिंचनधर्मसु मगना।
याको आचारज उर लावे, तिनपद फलैं शिव पावे।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमाकिंचन्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मनवचतन नारी को त्यागे, सो वृष ब्रह्मचर्य भय भागे।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलैं शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये दशधर्म कर्मक्षयकारी, इनतें जाय पापमय हारी।
आचारज इस वृष को धारें, तिनपद जजों पापक्षय कारे।।

ॐ ह्रीं श्री दशधर्मसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आरत रौद्र भाव का त्यागे, तब सामायिक में मन लागे।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलैसुख होई।।

ॐ ह्रीं श्री सामायिकावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

थुति अरिहन्तसिद्ध की कीजे, सो स्तवनावश्यक गिन लीजे।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों भलेसुख होई।।

ॐ ह्रीं श्री स्तवनावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्दन नमस्कार नति कीजे, अरिहन्तन को शीश नमीजे।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री बंदनावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

लगे दोषको जो निरवारे, प्रतिक्रमण आवश्यक धारें।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रतिक्रमणावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच काय पाप विधि त्यागे, प्रत्याख्यानावश्यक जाये।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों रहों नहिं मोही।।

ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तनको मोह जबै सब त्यागो, कायोत्सर्गावश्यक जागो।
याको करे आचाराज सोही, इन पूजा फल रहे न माही।।

ॐ ह्रीं श्री कार्योत्सर्गावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् आवशि करे मुनिन्दा, सो जगनाथ हरे भवफन्दा।
आचाराज इन गुन के धारी, तिनपद धोक अरघ दे भारी।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यकसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई छन्द)

मनकपि ध्यान रज्जु बँधवाय पापविचार विषैं नहिं जाय।
आचारज मन इमि वश करे, तिनपद जजों फलै अघ हरे।।

ॐ ह्रीं श्री मनोगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वचन कहे जिनधुनि अनुसार, वचनगुप्ति जानो जग तार।
याको आचारज प्रतिपाले, तिनपद जजों फलै अघ टाले।।

ॐ ह्रीं श्री वचनगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काय थकी अघकाज न करे, ध्यानाध्ययन मांहि संचरे।
कायगुप्ति आचारज ध्याय, तिनपद जजों सुभग फलदाय।।

ॐ ह्रीं श्री कायगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये ही तीन गुप्ति सुखकार, मनवचतन अघ रोनक हार।
इनको करे अचारज सोय, तिनके पद पूजों मद खोय।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिगुप्तिसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(बेसरी छन्द)

ज्ञानाचार ज्ञान सुध आने, सकल पदारथ भेद बखाने।
याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै सुध सोई।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनाचार दृष्टि सुध लावे, दोष पच्चीस तहां नहिं पावे।
याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै सुध होई।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तेरह विधशुभ चारित धारें, सहे परीषह आप न हारे।
याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री चारित्राचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तप बहु करे खेद नहिं आने, तपाचार सो अधगिरि भाने।
याको करे आचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री तपश्चरणाचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्याचार शक्ति को फोरे, शिवमग लहे कर्म अरि तोरे।

याको करे अचारज सोई, तिनपद जजों फलै शिव होई।।

ॐ ह्रीं श्री वीर्याचारसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

द्वादश तप दश धर्म षडावशि जानिये, तीन गुप्ति आचार पंच सरधानिये।
ये छत्तीस गुन धरें आचाराज होय जी, तिनपद पूजों अर्घ्यलेय मद खोय जी।।

ॐ ह्रीं षट् त्रिंशद् गुणसहितायै श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मुनियानन्द की चाल

संघ के नाथ आचार्य सो होय हैं, तिन विषे मुख्य गुण तीस षट् सोय हैं।
और गुण घने तिन, माहि शुभ पाईये, इन चरण-भक्तिफल, तीर्थपद पाइये।।
मति श्रुत अवधि इन आदि होय ज्ञान जी, कहे भव्य जीवको भवान्तर जान जी।
मन विषें भक्ति के होय सो पाइये, इन चरणभक्तिफल, तीर्थपद पाइये।।
कहे उपदेश जिस, जीव साता लहे, सुरग शिव राह निज, जान आनि को कहे।।
बिना कारण सकल, सत्त्वबन्धु पाइये, इन चरणभक्ति फल तीर्थपद पाइये।।
सकल श्रुति जान अभि-मान ताके नहीं, फुरी बहु ऋद्धि गुण थूल तिन उर मही।
तीन जगपूज्य बिनराग सम पाइये, इन चरण भक्तिफल, तीर्थपद पाइये।।

दोहा

इन्हें आदि आचार्य में, गुण पावन है सार। जे भवि इनपद थुति करें, ते उतरें भवपार।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्यभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

12. बहुश्रुतभक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

एकादश अंग पूरब चौदह धारजी, शिष्यन को जु पढ़ावें तप के भारजी।
ऐसे गुणके धार उपाध्याय सारजी, पूजों इन पद थापन कर थुति धारजी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुतभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(मुनियानन्द की चाल)

नीर शुभ निर्मलो, गंगको लाइये, कनकझारी भरों, भली थुति गाइये।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर घसि बावनो, चन्दना सारजी, भक्ति कर कनक के पात्रमधि धारजी।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षता समुज्ज्वला खण्ड बिन सारजी, मुक्तिका-समान शुभ पात्र में धार जी।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल सुरवृक्ष के, गन्ध शुभ रंगमई, गूंथकर मालको हाथ अपने लई।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुभग रस लेय, नैवेद्य कर लाइये, पात्र धर सुभग मुख भक्तिगुण गाइये।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप मणिमय सुभय ज्योति परकाशिका, धार शुभपात्र कर, आरती दासिका।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दसविध करी, गन्ध बहु धारजी, अग्नि मधि खेवने, चले सुखकारजी।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफला लोंग शुभ, खारका जानिये, आदि इन फला ले भक्तिचित ठानिये।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गन्ध तन्दुला, फूल नैवेद्य-जी, दीप शुभ धूप फल, अर्घ्य निरखेद जी।
तीर्थपददाय सुन, लोभ उर आयजी, पूजिहों बहुश्रुत भाव मन काय जी।।

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्तिभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य

मुनियानन्द की चाल

अंग एकादशा, पूर्व चौदह सही, इन सबै जान बहु-श्रुत गुणकी मही।
जजे इनके तिको, इन पदी पायजी, मैं जजों बहुश्रुत, भक्ति मनलाय जी।।

ॐ ह्रीं एकादशांग चतुर्दशपूर्वगुणधारकायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जतनतें चालिये, जतन उठ बैठजी, जतनतें काज सब, कहे गुण पैठजी।
अंग आचार मधि, जतनतें अघ नहीं, या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही।।

ॐ ह्रीं आचारांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विनयविधि और अध्ययन श्रुत को सही, आप मत और मत, भेद ता मधि कही।
सूत्रकृतांग अंग के, माँही इमि जानिये, या धरा मुनिबहु-श्रुत थुति आनिये।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तहां जिय थान इक, आदि उन्नीस जी, षट् अधिक चार शत् कहे जगदीश जी।
यह स्थानासु अंग, मांहि सब इमि कही, या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही।।
ॐ ह्रीं स्थानांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
काल द्रव्य क्षेत्र इन, आदि सम गाइये, सकल सम वस्तु जो, जगत में पाइये।
सकल समवाय अंग, माँहि या विधि कही, या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों शुभ मही।।
ॐ ह्रीं समवयांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
जीव अस्ती तथा, नास्ती है सही, एकवा अनेक जिय, आदि सब विधि कही।
अंग व्याख्या प्रज्ञप्ति, नाम इमि चयो, या धरा मुनिबहु-श्रुतपदवि जजि नयो।।
ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
तीर्थ जिनदेव के, कहे अतिशय सही, दिव्यधुनि समोसर्ण, आदि शोभा कही।
अंग ज्ञातृकथा मांहि, इमि सबही कहे, या धरा मुनि बहुश्रुत पदवि जजि लहे।।
ॐ ह्रीं ज्ञातृकथंगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
प्रतिमाभेद ग्यारह तहां वरणए, और आचर श्रावक तनै बहु चए।
उपासकाध्ययन सो, अंग या विधि कही। या धरा मुनिबहु-श्रुत जजों सुख मही।।
ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
एक इक तीर्थ समै, ये जु दस दस भये, आयु अन्त काय तजि, ज्ञान ले शिव गये।
अन्तःकृतांगदशम के, माँहि इनविधि कही, या धरा मुनि बहु-श्रुत जजों शुभ मही।।
ॐ ह्रीं अन्तःकृतशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
एक इक जिन समै, भये दस दस मुनी, अन्त काय तजि, पदवी अहमिंद ठनी।
यह अनुत्तरोपपाद, दशमअंग इमि कही, या धरा मुनि बहुश्रुत-जजों थुति ठही।।
ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादकशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गई वस्तु तथा मूठि-तनी वस्तु जानजी, ओर होनहार विधि, लिखे सब आन जी।
प्रश्न व्याकर्ण अंग, धार उत्तर करे, या धरा मुनि बहु-श्रुत जजों अघ हरे।।
ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
शुभाशुभ कर्म का, फल तिको जानिये, तीव्र मन्द जैसे अनुभाग रस आनिये।
सूत्र सु विपाक अंग, मांहि इमि भास है, या धरा मुनि बहु-श्रुत थुति राशि है।।
ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
अंग आचार इन, आदि ग्यारह सही, महाश्रुतज्ञान यह, ऋद्धि बहु इस मही।
तीन जग गुरु जग, नाथ मुनि सोयजी, अंग सब धार बहु-श्रुत जजों जोय जी।।
ॐ ह्रीं एकादशांगसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
वस्तु उत्पाद व्यय, ध्रौव्य लक्षण सही, द्रव्य पर्याय गुण, साधनादिक कही।
पूर्व उत्पाद सो, तास में इमि चयो, या धरा बहुश्रुत, पाय मैं सिर नयो।।
ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तास मैं सुनय वा, कुनय व्याख्यान जी, द्रव्य क्षेत्रर तने भाव को मान जी।
कथन इन आदि अग्राणि पूर्वकह्यो, या धरा बहुश्रुत, पाप जजि धनि भयो।।

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म वीरज तथा, काल वीरज सही, भाव तप वीर्य वा, क्षेत्र वीरज कही।
वीर्य अनुवाद पूरब, विषें इमि कह्यो, या धरा बहुश्रुत, पाय जजि धनि भयो।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य अस्ती तथा नास्ती इमि कह्यो, भावद्रव्य क्षेत्र काल आदि तहां सब चयो।
पूर्व अस्ति नास्ति में, कहीयों विधि सही, या धरा बहुश्रुत, पाय जजि शुभ मही।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान वसु मति श्रुत, आदि जे फल कहे, और बस ज्ञान के, भेद वर्णन ठहे।
ज्ञानपरवाद पूरब, तिको जानिये, या धरा बहुश्रुत, जजों थुति ठानिये।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वचन के भेद सत, असत अनुभय उभय, समिति गुप्ती तने, भाव-भाखे समय।
सत्यपरवाद पूरब विषें सब कहे, या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच ठये।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीव निश्चय नयें, और व्यवहार है, जीव अस्तित्व विधि, कथन अनुसार है।
पूर्व यह आत्मपर-वाद में सब कहो, या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध उदय सत, मूलकर्म जानिये, प्रकृति उत्तर तनें, भेद बहु मानिये।
कर्म परवाद पूरब विषें इमि कही, या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

या विषें समिति व्रत, तप निदेशा सही, सकल अघ त्याग की, रीति तामें कही।
यह प्रत्याख्यान पूरब सबै वरनयो, या धरा बहुश्रुत जजों सब सँग नयो।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

या विषें तप विद्या, साधने मन्त्र जी, विद्या सामर्थ्य फल, और विधि अन्यजी।
पूर्व विद्यानुवादा विषें इमि कही, या धरा बहुश्रुत जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ जिन जन्म कल्याण आदिक सही, भानु शशि जोतिषी, और महिमा कही।
पूर्व कल्याण इस, बाद में इमि चयो, या धरा बहुश्रुत जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वैद्य ज्योतिष कथन, तासमें पाइये, विषो विष नाशनै, मन्त्र जहाँ गाइये।
पूर्व प्राणानुवाद, मैं यह सब कही, या धरा बहुश्रुत, जजों मन वच सही।।

ॐ ह्रीं प्राणानुवादपूर्वं सहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द अलंकार सँगीत नृत तहां कहे, तिया चौंसठ कला, शिल्पविधि सब कहे।
पूर्व किरिया सु विशाल में इमि कही, या धरा बहुश्रुत, जजों मन तन सही।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वं सहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कथन त्रयलोक का, मोक्ष साधन सही, गिनति जानन करण, सूत्रविधि सब कही।
पूर्व त्रयलोकबिन्दु मांहि यह सब कह्यो, या धरा बहुश्रुत, पूज मैं धनि भयो।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकबिन्दुपूर्वं सहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंग ग्यारह भले, पूर्व चौदह सही, भेद इनका लहे, गुरु ते हम कही।
पढ़े निजपाठ औरन थकी कहतजी, जजों ते बहुश्रुत, ज्ञान गुण सहत जी।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वसहितायै श्री बहुश्रुतिभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मुनयानन्द की चाल

बहुश्रुत जगतगुरु, सकल गुणधार है, श्रुतसागरतनों, लहे प्रभु पार है।
राग बिन जगत के, बन्धु सम हितकारा, नमों तिन चरण फल, होय मो अघहरा।।
आप पढ़ि शिष्यन की, देत उपदेश जी, तासको धार भव्य लहे मुनिभेष जी।
ध्यानाध्ययन मांहि, निश-दिना सुखमय खरा, नमों तिन चरण फल, होय मो अघ-हरा।।
करै बहुभांति तप, ऋद्धि तिनपै घनी, पापकी बेल जड़मूलतें सब हनी।
करत दर्शन लहे, पुण्य बड़ शुभधरा, नमों तिन चरणफल, होय मो अघ-हरा।।
नाम गुरु का लिये, ठाम नीको लहे, ज्ञान उर उपजे वा, पाप अरिको दहे।
बहुश्रुत भक्ति तें भरम भागे खरा, नमों तिन चरण फल, होय मो अघ-हरा।।
चहों भव भव विषें, भक्ति बहु शास्त्रकी, और नहिं चार मोहि, राज सब भरत की।
अरज यह मो तनी, भक्ति दे जग गुरा, नमो तिन चरण फल, होय मो अप-हरा।।

दोहा

भक्ति उपाध्या की किये, भव उपाधि नश जाँय।
मरण मिटे जनमें नहीं, इमि लख पूजत पांय।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतिभक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

13. प्रवचनभक्ति भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

जिनकी वाणी सिद्धान्त संग ग्यारह सही, चौदह पूरब और प्रकीर्णक धुनि कही।
षटकायिक जिय राखन को जननी-समा, सो इहां थापि जजों, काय मनवचरमा।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

चौपाई छन्द

पदम कुण्ड को निर्मल नीर, रतनजड़ित झारी धरि धीर।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, तातो जनम मरण नहिं कोय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन बावनघस जल डारि, कनकपियाले धर हित धार।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल भवतप कबहुँ न होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ताफलसम जान, पातर मैं धरि निजकर आन।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल अखयथान शिव होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूलकनक सुरतरु के लाय, माल करी मनमें हरषाय।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल कामनाश सब होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

नानारस नैवेद्य बनाय, सुभग पात्र में मोदक लाय।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताके फलें क्षुधा नहिं होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीप तमनाशक जान, कनकथाल भर आरति ठान।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल मिथ्यातमक्षय होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप करीदसविध गंध लाय, अगनि मांहि खेऊं हरषाय।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताफल अष्टकरम क्षय होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल खारक लोंग बदाम, पूंगीफल आदिक शुभ नाम।
पूजों प्रवचन जिनधुनि सोय, ताके फलशिव को पद होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगन्ध तन्दुल सुम जान, चरु दीपक फल धूप बखान।
पूजों प्रवचन अर्घ्य संजोय, ताफल आवागमन न होय।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्यं (चौपाई छन्द)

एकादश अंग जिनकी वान, तामधि नानाभेद बखान।
ये सब संशय नाशनहार, पूजों प्रवचन है सुखकार।।

ॐ ह्रीं एकादशांगसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरबजिन धुनि सही, मिथ्यातम-नाशन-रवि कही।

ये सब संशय नाशनहार, पूजों प्रवचन है सुखकार।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकीर्णक अंगे प्रवचन सार, ताके चौदह भेद निहार।

ये सब संशय-तम-हर सूर, सो मैं जजों भाव भरपूर।।

ॐ ह्रीं प्रकर्णकांगसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवन तें समताभाव, तप संजम करने अति चाव।

सो सामायिक प्रवचन जान, पूजों मैं वसुद्रव अर्घ्य आन।।

ॐ ह्रीं सामायिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तामें चौबिस जिन कल्यान, और स्तवन तिनों का जान।

चतुर्विंश स्तवन अंग सोय, सो मैं जजों भाव शुध होय।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवनसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रतिमा जिननाम सुभाय, तीर्थंकर इनको सिरनाय।

वन्दन प्रवचन में इमि कही, सो मैं जजों शुद्ध चित सही।।

ॐ ह्रीं वन्दनासहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

किये दोष यातें क्षय होय, जामें ऐसो कथन जु होय।

सो प्रतिक्रमण प्रवचन जान, सो मैं जजों भक्ति उर आन।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देव धर्म गुरु विनय बखान, और विनय विधि बहुतीजान।

विनयक अंग में यह विधि कही, सो मैं जजो अरघ ले सही।।

ॐ ह्रीं वैनयिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी थुति विधि तहां, नमस्कार परदक्षिण जहां।

कृतीकर्म में यों विधि कही, सो मैं जजों भाव शुभ मही।

ॐ ह्रीं कृतिकर्मसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि अहारइमि करे इमि चलै, जती अचार और तहां मिलै।

दशवैकालिक इस विधि कही, सो मैं जजों भाव शुभ ठही।।

ॐ ह्रीं दशवैकालिकसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

परिषह सहन सहन उपसर्ग, इनका फल परसन के वर्ग।

उत्तराध्ययन विषें इमि कही, सो मैं जजों भाव शुध मही।।

ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यह मुनि योग्य आचरणजोय, भये अयोग्य दंड ले सोय।

कल्पविहार अंग इमि कही, ते मै जजों भाव शुध मही।।

ॐ ह्रीं कल्पविहारसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

या द्रव्य खेतर कालर भाव मुनि की क्रिया योग्य यह ठाव।

कल्पाकल्प अंग इम कही, ते अंग जजों शुद्ध चित सही।।

ॐ ह्रीं कल्पाकल्पसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकल्पी थिरकल्पी साध, और महा नर क्रिया समाध।
महाकल्प में या विधि कहो, ते अंग प्रवचन पूजों सही।।

ॐ ह्रीं महाकल्पसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चार प्रकार देव किम होय, तहां उपजन की तपविधि सोय।
पूजा दान आदि तँह जान, सो पुंडरीक जजों अंग मान।।

ॐ ह्रीं पुण्डीकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र अहमिंद्र होनको सही, तपश्चरण आदिक विधि कही।
महापुण्डरीक अंग सो जान, सो मैं जजों अर्घ्य शुभ आन।।

ॐ ह्रीं महापुण्डीकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

क्रिया प्रमाद थकी अघ सोय, ताके नाश होन विधि जोय।
सो निषद्यका अंग में कही, सो मैं जजों भाव शुध सही।।

ॐ ह्रीं निषद्यकांगबाह्यसहितायै श्री प्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्व प्रकीर्णक भंग, जिन मुखतें उपजे सुभरंग।
सो सिद्धान्त जगत हितकार, सो मैं जजों दयो दधिसार।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोत्पन्नप्रवचनभक्ति भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला- दोहा

यह जिनवाणी जगत हित, करुणासागर जान। षट्कायिक रक्षक जननि, सो जजि हों सुखदान।।

(बेसरी छन्द)

यह जिनवानी शिव सुखदानी, लगे पान नाशे मुनि मानी।
यातें सुरग मोक्ष को पावे, तातें भवि हम शीश नमावें।।
या बिन उरके पट नहिं खूटे, या बिन कर्मबन्ध नहिं छूटे।
यह भवदधि को नाव बतावें, तातें भवि हम शीश नमावें।।
याही तें मुनि शिवमग पाया, या बिन आतम जग भरमाया।
सफलभवा जब जिनधुनि पावें, तातें भवि हम शीश नमावें।
यह जिनवानि भुवनत्रय दीवा, यातें जिनपद लखे सुजीवा।
दयानिधान जगत जस गावें, तातें भवि हम शीश नमावें।।
हरि सुर याको पूजें भाई, याफल सुरगलक्ष्मी को पाई।
गुणधर मुनि याकोनित ध्यावें, तातें भवि हम शीश नमावें।।

दोहा

जिनवाणी गुण कथन को, समरथ नाही कोय। ता ध्याये जिनपद मिले, इमि लखि पूजों सोय।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

14. षट् आवश्यक भावना पूजा

गीता छन्द

सामायिक स्तवन प्रतिक्रम, वन्दना मन लाइये।
प्रत्याख्यान कायोत्सर्ग ले, षडावश्यक गाइये।।
ये करें मुनिवर रोज निहचें अवशिकें बिसरें नहीं।
इहां थापि षडावश्यक शुभावन, पूजहों मन वच ठही।।

ॐ ह्रीं श्री षट्आवश्यकभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री षट्आवश्यकभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री षट्आवश्यकभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(पद्धरि छन्द)

गंगाजल निर्मल गन्धधार, धरि रतनझारि लायो विचार।
मनवचनकाय शुभभक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन घसि निर्मल नीर डार, धर सुभगपात्र में थुति उचार।
जिनको षद या फल होय आय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षय अखण्ड उज्ज्वल सुगन्ध, मुक्ताफल मानो धरे स्कन्ध।
धर भक्तिभाव ले हाथ आय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
सुम कल्पबेल के गन्ध धार, नाना रंगधारी शुभ अकार।
तिनकी कर माला भक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
नाना रसजुत नैवेद्य जान, कर मोदक शुभ आचार ठान।
धरि सुभग थाल उरभक्ति भाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
मणिदीप ज्योति मय तम विनाश, भरथाल आरति थुति प्रकाश।
अंग सकल नाय मन शुद्ध लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
ले अगर आदि दशगन्ध सोय, कर इकठी धूप बनाय जोय।
खेऊं अगनी में भक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफल बदाम खारक अनूप, पूंगीफल पिस्ता लोंग रूप।
धर भले पात्र में भक्ति लाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन तन्दुल पुष्पसार, चरु दीप धूप फल अरघ धार।
धर भक्तिभाव ले आय पाय, पूजों षट् आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य - चौपाई छन्द

सब जीवनतें समता-भाव, तप संयम करने को चाव।
सो सामायिक आवशि जोय, मैं पूजों वसुद्रव्य सँजोय।।

ॐ ह्रीं सामायिकसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों जिनकी थुति होय, स्तवनावश्यक कहिये सोय।
ताको वसुद्रव अर्घ्य बनाय, पूजाविधि ठाने मन लाय।।

ॐ ह्रीं स्तवसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सो जिनवर को शीशनमाय, पूजाविधि ठाने मन लाय।
वँदनावश्यक कहिये सोय, ताको पूजों अर्घ्य सँजोय।।

ॐ ह्रीं वन्दनासहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रमादतें लागे दोष, ताको दूर करन को पोष।
सो प्रतिक्रमणावश्यक जान, पूजों अर्घ्य धार सो आन।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पापक्रिया को त्याग सुजान, वरते सावधान बुधिमान।
प्रत्याख्यानावश्यक जोय, ताको मैं पूजों मद खोय।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचतन का त्यागी होय, वरते ममतरहित चित सोय।
कायोत्सर्गावश्यक जान, याको मैं पूजों मन आन।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गसहितायै श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् आवश्यक मुनि करे, इनविन वरत दोष को धरे।
तातें अवश्य करे मुनिनाथ, मैं यह भाव जजों सिर हाथ।।

ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला (बेसरी छन्द)

ये षट् आवश्यक मुनिवृष राखें, खेत बाड़ ज्यों रक्षा भाखें।
अवश्य कर तातें सुनि भाई, नामावश्यक जिनधुनि गाई।।
आवश्यक ये जजें सु प्रानी, सो अवश्य शिव लहेमहानी।
तीर्थंकर पद याते पावे, और नाहिं जग में भरमावे।।
आवश्यक हरता अघ-धारा, आवश्यक ते कर्म कुठारा।
आवश्यक मुनिवृष जड़ जानो, आवश्यक मुनिमित्र बखानो।।

आवश्यक भावन जो भावे, सो भवि अवशि अमर हो जावे।
आवशि ध्यान आवश्यक धारें सो प्राणी कर्मारी मारे।।
आवशि तें आरति नश जावे, आवशि तें आतमहित पावे।
हरे पाप वृषको उमगाया, तातें आवशि भाव सुभाया।।
आवशि समताभाव बढ़ावे, आवशि तपसंजम समझावे।
आवशि जिनथुतिजाननहारा, आवशि प्रभुपूजाविधिसारा।।
आवशि लगे पाप को धोवे, आवशि पापत्यागविधिजोवे।
आवशि तनतें नेह तुड़ावे, सो आवशि मैं जजों सुभावे।।

दोहा

आवशिभाव अनूप धर्म, भावे जो सुधभाव। लहे तीर्थपद सो भविक, आवशि भाव कराव।।
ॐ ह्रीं श्री षडावश्यक भावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

15. मार्गप्रभावना भावना पूजा

स्थापना (अडिल्ल छन्द)

मन वच तन धन लाय बुद्धि तप भावतें, धर्म उद्योत करे भवि अति ही चावतें।
मार्गप्रभावना भाव तीर्थपद दाय जी, सो मैं थापन थाप जजों थुति लाय जी।।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

अष्टक - मुनियानन्द की चाल

क्षीरदधि तानों ले, नीर निरमल सही, कनकझारी धरयो, महापुण्य की मही।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दना नीर घसि गन्धमय सारजी, सुभग पातर विषें, जुगत तै धार जी।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षता खण्ड-बीन नखशिख सही, उज्ज्वला कली जिम, जाय कैसी कही।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल सुरवृक्ष के, गन्धमय सार जी, रंग शुभ लेयकर, माल थुति धार जी।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।
ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
लय नैवेद्य रस, धार सुखकार जी, मोदकादिक सुभग, थाल में धार जी।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दीप तम के हरा, रतन के लाय जी, थाल भर आरती, भक्ति बहु भाय जी।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

धूप शुभ गन्ध की, धार मन लायके, अग्नि मैं खेय हों, भक्ति मुख गायके।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफला लोंग पूंगीफला आन जी, और फल सुभग ले, पात्रमें ठान जी।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गन्ध अक्षता, पहुप चरु लाइये, दीप फल धूप कर, अर्घ्यगुन गाइये।
तीर्थपद भाव को, धार मन माँहि जी, पूजिहों मार्गपर-भावना ठांहि जी।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकर्घ्यं - मुनियानन्द की चाल

द्रव्य बहु खरचजिन, मन्दिर बनवाय हैं, तीर्थ सिद्ध क्षेत्र को, संघ चलवाय हैं।
दीन का दान देय, दया मन लायजी, सो जजों मार्गपर-भावना भायजी।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यतःमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आप लखते नहीं, धर्म घाते सही, धर्म के कारणें, मरण माड़े मही।
तास लख जोर बहु, सकल कम्पे जना, जोरतें धर्म पर-भाव पूजों घना।।

ॐ ह्रीं श्री शक्तितः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हुकुम ताके थकी, सकल कम्पै मही, देख धरमी नहीं, धर्म लंधे कहीं।
धर्मधोरी महा, धर्म का धारजी, जजों यह भाव पर-भावना सार जी।

ॐ ह्रीं श्री आज्ञातः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देख तप तास सब, चकित मन में रहे, देहते ममत तज, वास दुद्धर लहे।
नाँहि मोही तबै, काज ऐसो बनें, तप थकी मार्ग पर-भाव इह जज नमें।।

ॐ ह्रीं श्री तपस्तः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन सदा धर्म पर-भावना चाहि है, इन्द्र चक्री जिसा, उछल मन भाय है।
देख सुन धर्म उद्योत सुख पायजी, मन थको धर्म पर-भाव जज याहिजी।।

ॐ ह्रीं श्री मनस्तः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देख तिस ज्ञान जग, महा चक्रित रहे, ज्ञान केवल थकी कालत्रय की कहे।
ज्ञान ऐसो नहीं, और मत पायजी, ज्ञान कर धर्म पर-भाव जज भायजी।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

देख तिस दान को, सकल अचरज लहे, दान ऐसो नहीं, और मत में कहे।

या जिसो धर्म नहिं, और जग इमि कहे, धर्म पर-भाव जज, दान कर शुभ लहे।।

ॐ ह्रीं श्री दानतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय कर धर्म जग, माँहि परगट करे, धर्म पर-भावना, भाव जजि अघ हरे।।

देख भक्ति तासकी सबैं जन धनि कहे, या समाभक्ति जग-माँहि नहिं अनि रहे।

ॐ ह्रीं श्री न्यायतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति कर धर्म परगट करे सोय जी, मार्ग पर-भावना भक्ति जजि जोय जी।

देख समभाव कहें, धन्य है ताहि जी, धर्म यासो नहीं, और जग ठांहि जी।

ॐ ह्रीं श्री भक्तितः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भाव समता थकी, धर्म परगट करे, मार्ग पर-भाव जजि सकल अघ को हरे।।

ॐ ह्रीं श्री समताभावतः मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

और बहु धर्म के अंग हैं सार जी, तिन थकी धर्म पर-गट करे भार जी।

काज सो ही कर, धर्ममहिमा लहे, सो जजों धर्म पर-भावना अघ दहे।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला - दोहा

वृष विकास जासों लहे, सो ही करिये काज। ताफल तीर्थंकर बने, लहे निरंजन राज।।

(बेसरी छन्द)

वृष प्रभावना जो भवि ठाने, सो जग के सब पातक हाने।
धर्म प्रकाशन करो महानो, सो प्रभावना अंग बखानो।।
दान देय मन वांछित सोई, कल्पवृक्ष सम पूरे जोई।
ताकर धर्मोद्योत करावे, सो प्रभावना अंग कहावे।।
संघ चलावे तीरथ ठांही, मनवांछित द्रव खर्च करांही।
विनयसहित उत्सव बहु आने, सो प्रभावना अंग बखाने।।
जिनमन्दिरजिनबिम्ब करावे, फेर प्रतिष्ठा कर हरषावे।
कर उछाह धर्म परभावा, सो प्रभावना अंग सुनावा।।
तप बहु करे उग्र सुख पावे, सिंहनिःक्रीडित आदि करावे।
भारीउग्र महातप आने, सो प्रभावना अंग जु ठाने।।
मतिश्रुत अवधिज्ञानतें भाई, मनपरजय आदि सुखदाई।
इनतें जग के संशय खोवे, सो प्रभावना अंगमयहोवे।।

दोहा

परभावन के भेद बहु, करे भव्य मन सोय। ताको जिनपद होत है, अधिक कहे क्या कोय।।

ॐ ह्रीं श्री मार्गप्रभावनाभावनायै पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

16. प्रवचनवात्सल्य भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

तिनकी वानी प्रवचन जग में सार है, करुणासागर करत भव पार है।
याको वत्सल भाव प्रीति मन लाय है, सो इहां प्रवचन थाप भावना भाय है।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधापनम्।

(बेसरी छन्द)

गंगानदी की निर्मल नीरा, उज्ज्वल सुभगगन्ध ज्यों क्षीरा।
भले पात्र में धर थुति गाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै जलम् निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन वावन पावन कारी, घसिहों नीर डार हितधारी।
कंचनझारी धर मन लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा।
अक्षत उज्ज्वल बीन अनूपा, नखशिख जुत मुक्ताफल रूपा।
भले पात्र में धर कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल गन्ध शुभ रंग को धरी, सुरतरु पुष्प भावना कारी।
गूंथ माल अपने कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।
षटरस जुत नैवेद्य बनाई, मोदक भले बनाकर लाई।
नीके पात्र मांहि धर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
दीपक रतन ज्योति परकासो, तमनाशक निधूम सुवासी।
कनक थाल भर आरति लाई, पूजों प्रवचन वत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।
धूप अगर चन्दन की ठानी, दसविध गन्ध और धरआनी।
अगनि मांहि मैं खेवन लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफल लोंग सुपारी जानो, खारक आदि भले फल आनो।
स्वच्छ पात्र में धर कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै फलम् निर्वपामीति स्वाहा।
नीर गन्ध अक्षत सुभ भाये, चरु दीपक फल धूप सु लाये।

अरघ बना अपने कर लाई, पूजों प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येकार्घ्य - मुनियानन्द की चाल

पत्र शुभ ऊजरे, पुष्ट चिकने सही, दीर्घ मौली किये, हर्ष मन की मही।।
तासमें बानि जिनसूत्र उतराइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री शुभपत्रोत्कीर्णन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंक चांदी तथा, कनक के मांड़िये, सुभग आकार धर, भक्ति अघ छाँड़िये।
या विधो हर्ष सिद्धान्त उतराइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञाक्षरलेखनप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तास जर चिकन किमखाब मसरू सही, और उत्कृष्ट बहुमोल तिनको कही।
लाय उर भक्ति, औछांड बनबाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री मनोज्ञबहुमूल्यबन्धन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भले श्रुत राखने कनक चांदी तने, काष्ठ के सुभग पट्ट, उग्र तिनके बने।
करे पट्टा इसी, भांति मन लाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री सुभगकाष्टपत्रकरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कनक मय ज़डित, चाँदी तने जानिये, भरत वा घटित अनि, धातु कर आनिये।
काष्य चित्राम चौकी सु बनवाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री वाचनहेतुसुभगचतुष्पादकरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

बांचिये वानि जिन, मन वचन काय जी, एक कर चित्त उर, भक्ति उमगाय जी।
वानि जिन विनयते, पाठ पढ़वाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः शास्त्रपठन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मन वचनकाय थिर, ठान जिन धुनि सुने, धारणा धार अघतें डरे शुभ ठने।
विनयजुत श्रवन कर, आप धनिध्याइये, भाव प्रवचन वात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः शास्त्रश्रवण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाय पुस्तक धरे, ठाम शुभ जोय जी, विनयते काय मन, शुद्ध अति होय जी।
जतन को राखि मन, हर्ष बहु लाइये, भाव प्रवचन वात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री विनयः शास्त्रधरण प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जतनतें लेय पुस्तक, विनय ठान जी, भक्ति मन वचन शुभ, कायतें आन जी।
महा आदर करत, शास्त्र ले आइये, भाव प्रवचन वात्सल्य जजि गाइये।।

ॐ ह्रीं श्री विनयतः पुस्तकस्थापनानयन प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धरण पुस्तक भलो, ठाम बनवायबो, नाहिं शरदी तहां, टीप करवायबो।
विनयतें पुस्तके, तहां धरवाइये, भाव प्रवचनवात्सल्य जजि गाइये।।

ऊँ ह्रीं श्री सविनयपुस्तकधारकस्थाननिर्माणरूपायै श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंग इन आदि बहु, विनयविधि ठानिये, प्रीति अति अन्तरें भक्ति शुभ आनिये।
जान जिनवानि आदर विनय लाइये, भाव प्रवचन वात्सल्य जजि गाइये।।

ऊँ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला - दोहा

वात्सल्य प्रवचन भावसों, जिनध्वनि तें अतिनेह।
विनयसहित वरते सदा, सफल तिन्हों की देह।।

(बेसरी छन्द)

जिनवानीतें वत्सल भावा, मैटत है जग का सब दावा।
ताकी सुर नर सेव करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।।
जो श्रुत सुने भाव हरषावे, आवा पर भेद तत्त्व सु पावे।
तिनतें सब जग प्रीति करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।।
प्रवचनपाठ करे मन लाई, ताको जस गाव सुरराई।
ताके पाप निकट नहिं आवें, जो जिय प्रवचनवत्सल भावें।।
जिन धुनि सुने हने अघ सोही, याको भेद लहे नहिं मोही।
सर्वलोक का प्रेम जु पावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।।
विनयसहित पुस्तक को राखे, ताका विनयो सब जग भाखे।
प्रीति घनी जिन धुनिते लावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।।
कनक रजत के पत्र महाने, सुन्दर महामूल्य के आने।
तिनपै जिनधुनि का लिखवावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।
श्रुतको बेठन सुभग करावन, लावे पट अतिसुन्दर पावन।
डोरी सुभग आन हरषावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।।
आगम धरने ठाम अनूपा, बनवावे दृढ़ सुन्दररूपा।
तहां सुमोहन चित्र करावे, जो जिय प्रवचनवत्सल भावे।

दोहा

इत्यादिक गुन जो लहे, दहे कर्मवन सोय। भावे प्रवचनभावना, अति चितवत्सल होय।।

ऊँ ह्रीं श्री प्रवचनवात्सल्यभावनायै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जयमाला - दोहा

सोलहकारण भावना, भावे जो भवि सोय। सो तीर्थंकर पद लहे, घनो कहे क्या कोय।।

मुनियानन्द की चाल

षोडशकारण यह, भावना भाय है, तहां न मद आठ षट् नायतन पाय है।
अष्ट सम्यक तने, दोष नहिं जानिये, मूढता तीन नहिं, ज्ञान शुद्ध आनिये।।

विनय गुरु देव की, राह जाने सही, भूल अविनय विषे, बुद्धि राखे नहीं।
जगत जस पाय अघ, ढाय समता लहे, जीव जो भावना भाय षोडश यहे।।
नारि पशु देव की, मनुष की जान जी, काठ चित्राम यह, जीव बिन मान जी।
चार विध नारि तजि, शील भावन सही, कारण षोडश यह, भावनाएं कहीं।।
ज्ञान उपयोग सो, पाठ जिनधुनि करे, श्रुतिअध्ययन में, नाँहि अन्तर परे।
पढ़े उपदेश करि, प्रश्न बहु ले सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
देख जग चपल नहिं, विषयसुख राचि है, मात सुत नारि तन, मांहि नहिं माचि है।
धरे वैराग्य उर, माँहि आनंद सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
त्याग धन तन करें राजलक्ष्मि सार जी, मात सुत पिता तिय देख बन्धकार जी।
छाड़ि परभाव, निजमांहि राचे सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
करे तप दुर्धरा, देख कायर डरें, मास पक्ष लो, नांहि अनजल करें।
शीश गिरि तरुतलें, नदी तट पै सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
मुनि तन विषें जिम, होय साता भली, सोहि विधि करें उर, भक्ति भावां मिली।
साधू-समाधी यह, भावना है सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
राह जब चले मुनि खेद तन में लहे, तथा बहु तप थकी, काय निर्बल रहे।
देख इन तबै भवि, पांव चंपै सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
देव जिनराय की, भक्ति पूजा करे, कण्ठ मधुरे थकी, गान शुभ उच्चरे।
भक्ति अरिहन्त सो भाव जे हैं सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
संघपति जगतगुरु, तीस षट् गुण धरे, लखे पर मन तनी, भाव समता भरे।
धर्म तीरथ तने, धीर धारी सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
अंग ग्यारह लखे, पूर्व दसचार जी, और गुन बने त्रय ज्ञान चव धार जी।
भक्ति इन तनी यह भाव शुभदा सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
भक्ति जिनवाणि की, करे मन लाय जी, मुनि आवशि करें, भक्ति तिन भाय जी।
भाव सो प्रवचन, ज्ञान सुखदा सही, कारण षोडश ये, भावनाऐं कहीं।।
मनवचन काय धन, लाय हरषाय जी, धर्म उद्योत करि पुण्य उपजाय जी।
मार्गपरभावना, अंग सुखदा सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।
वानिजिनविनयतें, सुने पढ़ि है भली, भाव वात्सल्य, प्रवचन पुण्य की रली।
या थकी भी महा, पुण्यफल ले सही, कारण षोडश ये, भावनाएं कहीं।।

दोहा

इत्यादिक ये भावना, षोडश भेद अनूप। भावे इनको भक्तितें, 'टेक' मोक्ष सिध रूप।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः महार्घ्यम्।

(इति षोडशकारण विधान उद्यापन समाप्त)